तुलसी प्रज्ञा

JOURNAL OF THE JAIN VISHVA BHARATI

खण्ड-६ अगस्त-सितम्बर १९८० अंक ५-६

वर्द्धमान ग्रन्थागार
जैन विश्व भारती, लाडनूं

जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

सम्मतियाँ

[१]

शोभनं, प्रशंसनीयं, पुनःपुनर्दर्शनीयं अभ्यासार्थं इदं ग्रन्थालयम् ।

—शिवशंकर आप्टे
३१-१-१९७६

× × ×

[२]

With all my best wishes of a good and full development.

—Dr. M. Vannucci,
UNESCO, New Delhi Office.
11-4-1976

× × ×

[३]

जैन विश्व भारती एक विश्व स्तर के विश्वविद्यालय तथा शोध-केन्द्र के रूप में उभर सके, इसकी सभी सम्भावनाएँ उपस्थित हैं। इसके पीछे जिन लोगों की साधना, तपस्या तथा विचारधारा काम कर रही है, वे बधाई के पात्र हैं।

—अमृत नाहटा, नई दिल्ली
१३-४-१९७६

× × ×

[४]

जैन विश्व भारती के बारे में चार-पाँच साल से जो बातें मैं सुन रहा था, उससे मेरे मन में कुछ सन्देह था कि इतनी दूरी पर इतना बड़ा कार्य कैसे होगा ? यहाँ आज मुझे प्रथम बार आने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। योजना बहुत बड़ी है, लेकिन जितना कार्य अभी तक हुआ है, देखकर मन में बड़ी प्रसन्नता है। जो जो कार्य (भवन आदि) बने हैं, अच्छे बने हैं। यहाँ का कार्य स्वच्छ व सुन्दर है। श्री श्रीचन्द जी रामपुरिया, श्री सन्तोषचन्दजी बरड़िया, श्री सम्पतराय जी भूतोड़िया, श्री बच्छराज जी पगारिया व श्री चम्पालाल जी दूगड़, श्री कन्हैयालाल जी गोस्वामी आदि का कार्य प्रशंसनीय है। आगम संग्रह, जयाचार्य-साहित्य संग्रह का कार्य अच्छा है। लाइब्रेरी में पुस्तकों का चयन सुन्दर है। समस्त कार्य-कर्ता बधाई के पात्र हैं।

—पद्मश्री प्रभुदयाल डाबड़ीवाला
२०-४-१९७६

× × ×

डॉ० कमलेश कुमार जैन

तुलसीप्रज्ञा

वर्द्धमान ग्रन्थागार
जैन विश्व भारती, लाडनूं

सम्पादक
डॉ० नथमल टाटिया

सह-सम्पादक
डॉ० कमलेशकुमार जैन

प्रबन्ध-सम्पादक
गोपीचन्द चोपड़ा

जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

तुलसीप्रज्ञा

खण्ड ६ अगस्त-सितम्बर, १९८० अंक ५-६

अनुक्रमणिका

पृष्ठ सं०

१. वचन-वीथी ३
- आगम वचन

२. आचार्य प्रवचन : धर्म और धर्म संघ ५
- युग प्रधान आचार्य श्री तुलसी
- संकलनकर्त्री-साध्वी जिनप्रभा

३. श्रीमज्जयाचार्य रचित 'झाणी चरचा' ६
- सम्पा०-अनु० मुनि नवरत्नमल

४. इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों से : मुनिश्री खेतसी जी (सतयुगी) ९
- मुनि नवरत्नमल

५. महावीर का अपरिग्रह : वर्तमान सन्दर्भों में १३
- डॉ० निजामुद्दीन

६. नई चुनौती एवं नई दिशा : जयाचार्य शताब्दी और तुलसी निधि १८
- देवेन्द्रकुमार कर्णावट

७. साहित्य-समीक्षा २५
- महाप्रज्ञ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व—वृन्दावनदास
- जैन धर्म के प्रभावक आचार्य – रतिलाल दीपचन्द देसाई

८. जैन विश्व भारती : समाचार-दर्शन २९

वार्षिक मूल्य : रु० २५.०० एक अङ्क का मूल्य : रु० २.५०

इस युग्मांक का मूल्य रु० ५-००

नोट—यह आवश्यक नहीं है कि इस अङ्क में प्रकाशित लेखों में उल्लिखित विचार सम्पादक अथवा संस्था को मान्य हों।

आगम वचन

वचन-वीथी

अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे गोतमादी समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—

किं भया पाणा ? समणाउसो !

गोतमादी समणा णिग्गंथा समणं भगवं महावीरं उवसंकमंति, उवसंकमित्ता वदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—

णो खलु वयं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं जाणामो वा पासामो वा। तं जदि णं देवाणुप्पिया ! एयमट्ठं णो गिलायंति परिकहित्ताए, तमिच्छामो णं देवाणुप्पियाणं अंतिए एयमट्ठं जाणित्तए।

अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे गोतमादी समणे णिग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—

दुक्खभया पाणा समणाउसो !

से णं भंते ! दुक्खे केण कडे ?

जीवेणं कडे पमादेणं।

से णं भंते ! दुक्खे कहं वेइज्जति ?

अप्पमाएणं।

अण्णउत्थिया णं भन्ते ! एवं आइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति कहण्णं समणाणं णिग्गंथाणं किरिया कज्जति ?

आर्यो ! श्रमण भगवान् महावीर ने गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थों को आमंत्रित कर कहा—

आयुष्मान् ! श्रमणो ! जीव किससे भय खाते हैं ?

गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थ भगवान् महावीर के निकट आए। निकट आकर वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार कर बोले—

देवानुप्रिय ! हम इस अर्थ को नहीं जान रहे हैं, नहीं देख रहे हैं, यदि देवानुप्रिय को इस अर्थ का परिकथन करने में खेद न हो तो हम देवानुप्रिय के पास जानना चाहेंगे।

आर्यो ! श्रमण भगवान् महावीर ने गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थों को आमंत्रित कर कहा—

आयुष्मान् ! श्रमणो ! जीव दुःख से भय खाते हैं।

तो भगवान् ! दुःख किसके द्वारा किया गया है ?

जीवों के द्वारा अपने प्रमाद से।

तो भगवान् ! दुःखों का वेदन (क्षय) कैसे होता है ?

जीवों के द्वारा, अपने ही अप्रमाद से।

भन्ते ! कुछ अन्य यूथक सम्प्रदाय (दूसरे सम्प्रदाय वाले) ऐसा आख्यान करते हैं, भाषण करते हैं, प्रज्ञापन करते हैं, प्ररूपण करते हैं कि क्रिया करने के विषय में श्रमण-निर्ग्रन्थों का क्या अभिमत है ?

तत्थ जा सा कडा कज्जइ, णो तं पुच्छंति ।

तत्थ जा सा कडा णो कज्जति, णो तं पुच्छंति ।

तत्थ जा सा अकडा णो कज्जति, णो तं पुच्छंति ।

तत्थ जा सा अकडा कज्जति, तं पुच्छंति ।

से एवं वत्तव्वं सिया ? अकिच्चं दुक्खं, अफुसं दुक्खं, अकज्जमाणकडं दुक्खं, अकट्टु-अकट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेदेंतित्ति वत्तव्वं ।

जे ते एवमाहंसु, मिच्छा ते एवमाहंसु ।

अहं पुण एवमाइक्खामि एवं भासामि एवं पण्णवेमि एवं परूवेमि—किच्चं दुक्खं, फुसं दुक्खं, कज्जमाणकडं दुक्खं, कट्टु-कट्टु पाणा भूया जीवा सत्ता वेयणं वेयंतित्ति वत्तव्वयं सिया ।

जो की हुई होती है, उसका यहां प्रश्न नहीं है ।

जो की हुई नहीं होती, उसका भी यहां प्रश्न नहीं है ।

जो नहीं की हुई नहीं होती, उसका भी यहां प्रश्न नहीं है ।

किन्तु जो नहीं की हुई है, उसका यहाँ प्रश्न है। उनकी वक्तव्यता ऐसी है—

१. दुःख अकृत्य हैं—आत्मा के द्वारा नहीं किया जाता, २ दुःख अस्पृश्य है—आत्मा से उसका स्पर्श नहीं होता, ३. दुःख अक्रियमाण-कृत है—वह आत्मा के द्वारा नहीं किए जाने पर होता है। उसे बिना किये ही प्राण-भूत-जीव-सत्त्व उसका वेदन करते हैं ।

आयुष्मान् ! श्रमणो ! जिन्होंने ऐसा कहा है, उन्होंने मिथ्या कहा है ।

मैं ऐसा आख्यान करता हूं, भाषण करता हूं, प्ररूपण करता हूं कि—

दुःख कृत्य है—आत्मा के द्वारा किया जाता है ।

दुःख स्पृश्य है—आत्मा से उसका स्पर्श होता है ।

दुःख क्रियमाण-कृत है—वह आत्मा के द्वारा किए जाने पर होता है । उसे कर-कर के ही प्राण-भूत-जीव-सत्त्व उसका वेदन करते हैं ।

—ठाणं, ३/३३६-३३७

—०—

शत्रु को हानि पहुंचा कर आप उससे नीचे हो जाते हैं, बदला लेकर बराबर हो जाते हैं, पर उसे क्षमा करके उससे ऊँचे हो जाते हैं ।

—महात्मा बुद्ध,

—०—

आचार्य प्रवचन*

धर्म और धर्म संघ

धर्म जीवन-शोधन की प्रक्रिया है । आयुर्वेद के अनुसार वमन, विरेचन, मर्दन आदि क्रियाओं के द्वारा शरीर का शोधन किया जाता है, वैसे ही धर्म के द्वारा जीवन का शोधन किया जाता है । जीवन-शोधन का पहला तत्त्व है-- संयम । संयम के द्वारा विकार मार्ग अवरुद्ध हो जाता है । मन का संयम चिन्तन को स्वस्थ बनाता है । बचन का संयम वाणी को पवित्र बनाता है और क्रिया का संयम आचार को पवित्र बनाता है । संयम का अर्थ ही है—सत् की प्रवृत्ति और असत् की निवृत्ति ।

संयम स्वतः नहीं हो जाता, उसके लिये साधना अपेक्षित है । साधना वैयक्तिक भी होती है, सामूहिक भी । वैयक्तिक साधना की अपनी कुछ कठिनाइयां होती हैं । इसलिए साधक धर्म की आराधना के लिए समूह को चुनता है । जिस समूह में धार्मिक लोगों का एक संगठन होता है, उसे धर्मसंघ कहा जाता है । धर्मसंघ धार्मिकों की व्यवस्था करता है, मर्यादाओं का निर्माण करता है और साधना के नये-नये आयाम उद्घाटित करता है । धर्म-संघ को मैं एक सुदृढ़ बाँध की उपमा देता हूं । जैसे नदी पर बनाया गया बाँध पानी को अपनी मर्यादा में रखता है, वैसे ही धर्मसंघ एक धार्मिक को गलत मार्ग की ओर जाने से रोकता है ।

हमारा तेरापंथ धर्मसंघ भी एक बहुत बड़ा संगठन है । दूसरे-दूसरे संघों की अपेक्षा मैं इसे एक विलक्षण संघ मानता हूं । इसका कारण है—एक नेतृत्व, एक अनुशासन और प्राणवान् मर्यादाएं । हर सदस्य इस संघ को पाकर सात्त्विक गौरव की अनुभूति करता है ।

धर्मसंघ ने हमें पाप-भीरुता का सबसे बड़ा दर्शन दिया । इसने प्रथम शिक्षण दिया—किसी को गाली मत दो, किसी को अपशब्द मत कहो और किसी का प्राण-वियोजन तो दूर, मन, वचन व कर्म से किसी के प्रति असत् चिन्तन भी मत करो । यही तो कारण है कि जो इस संघ की शरण में आ गया वह कृतार्थ बन गया । अहिंसा, दया, करुणा उसके अभिन्न अङ्ग बन गये ।

(शेष पृष्ठ १७ पर)

आचार्यश्री तुलसी के १५ जून, १९७६ को रतनगढ़ के प्रवचन से ।

श्रीमज्जयाचार्य रचित 'झीणी चरचा'

(मूल एवं हिन्दी अनुवाद)

सम्पा० एवं अनु०—मुनि नवरत्नमल

(खण्ड ५, अङ्क ११-१२ से आगे)

ढाल ९

१२. सर्व मूल गुण किसी आत्मा, चारित्र आत्मा जांणो जी।
सर्व उत्तर गुण जोग आत्मा, मुनि करै दस पचखांणो जी॥

सर्व मूल गुण (पंचमहाव्रत) कौन सी आत्मा है?

सर्व मूल गुण एक चरित्र आत्मा है।

सर्व उत्तर गुण (दश प्रत्याख्यान) कौनसी आत्मा है?

सर्व उत्तर गुण एक योग आत्मा है। मुनि नवकारसी आदि दस प्रकार के प्रत्याख्यान करता है, वह योग आत्मा है।

१३. देस मूल गुण किसी आत्मा, चारित्र आत्मा देसो जी।
देस उत्तर गुण जोग आत्मा, श्रावक नी सुविशेषो जी॥

देश मूल गुण (पांच अणुव्रत) कौनसी आत्मा है?

देश मूल-गुण एक देश-चारित्र आत्मा है।

देश उत्तर गुण (दश प्रत्याख्यान) कौनसी आत्मा है?

देश उत्तर गुण एक योग आत्मा है। श्रावक नवकारसी आदि दस प्रकार के प्रत्याख्यान करता है, वह योग आत्मा है।

१४-१६. सर्व उत्तर गुण देस उत्तर गुण, जोग आत्मा किण न्यायो जी।
सुभ जोगां सूं कर्म कटै छै, तिण ने निर्जरा कही जिनरायो जी॥
तिण निर्जरा रा बारा भेद कह्या छै, सूत्र उवाइ वायो जी।
प्रथम भेद अणसण जिन भाख्यो, चौथ भक्त तिण मांह्यो जी॥
काल अणोदरी उत्राध्ययने, अध्येन तीसमा मांह्यो जी।
पुरिमढ़ पोरसीयादिक त्यां में, निपुण विचारै न्यायो जी॥
रस परित्याग निर्जरा मांहि, आंबिल नींवी आयो जी।
ए सहु कर्म काटण री करणी, जोग आत्मसुख दायो जी॥

सर्व उत्तर गुण और देश उत्तर गुण ये दोनों योग आत्मा किस न्याय से हैं?

शुभ योगों से कर्म कटते हैं एवं उससे आत्मा की आंशिक उज्ज्वलता होती है, उसको जिनेश्वर देव ने निर्जरा कहा है।

औपपातिक सूत्र में उस निर्जरा के बारह भेद बतलाये हैं। उसका पहला भेद अनशन है, चतुर्थ भक्त (उपवास) आदि उसके अन्तर्गत हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र के तीसवें अध्ययन में ऊनोदरी (काल ऊनोदरी) को निर्जरा का दूसरा भेद कहा है। जो पोरसी (एक प्रहर तक अशन आदि का त्याग), पुरिमढ़ (दो प्रहर तक अशन आदि का त्याग) आदि किये जाते हैं, उन्हें ऊनोदरी कहा है। निपुण व्यक्ति इसके न्याय का विचार करें।

१७. रस परित्याग निर्जरा मांहि, आंबिल नींवी आयो जी।
ए सहु कर्म काटण री करणी, जोग आत्म सुखदायो जी॥

नींवी (दूध, दही आदि छह विगयों का वर्जन) और आयम्बिल (एक धान और एक पानी के अतिरिक्त खाद्य पेय पदार्थों का त्याग करना) ये दोनों निर्जरा के रस परित्याग भेद में गिने गये हैं। ये सब कर्मों के काटने की क्रियाएं हैं, जो योग आत्मा है।

१८. कर्मा री कर्त्ता छै केती, दर्शण जोग कषायो जी।
या तीनां सूं कर्म बंधे छै, अवरां सूं नहीं बंधायो जी॥

कर्मों का अर्जन करने वाली कितनी आत्माएं हैं?

दर्शन, योग और कषाय—इन तीन आत्माओं से कर्म का बन्ध होता है, शेष पांच आत्माओं से नहीं।

१९. पुन्य री कर्त्ता कवण आत्मा, जोग आत्मा सुभ ताह्यो जी।
पाप तणी कर्त्ता कुण आत्म, दर्शण जोग कषायो जी॥

पुण्य का अर्जन करने वाली कौन सी आत्मा है?

पुण्य का बंध करने वाली एक योग (शुभ योग) आत्मा है।

पाप का अर्जन करने वाली कौन सी आत्माएं हैं?

पाप का बन्ध करने वाली दर्शन (मिथ्या दर्शन), योग (अशुभ योग) और कषाय—ये तीन आत्माएं हैं।

२०. असासती कुण कवण सासती, द्रव्य सासती देखो जी।
असासती छै सात आत्मा, निपुण न्याय सूं पेखो जी॥

आठ आत्माओं में कौन-कौन सी शाश्वत हैं और कौन-कौन सी अशाश्वत हैं?

एक द्रव्य आत्मा तो शाश्वत है और शेष सात आत्माएं अशाश्वत हैं। चतुर पुरुष न्याय पूर्वक देखें।

२१. कवण आत्मा कीधी होवै, सात आत्मा होवै जी।
द्रव्य आत्मा कीधी न होवै, बुद्धिवंत न्याय सूं जोवै जी ॥

करने से होने वाली कौन सी आत्माएँ हैं ?

सात आत्माएं करने से होती हैं। एक द्रव्य आत्मा करने से नहीं होती। बुद्धिमान् व्यक्ति न्याय पूर्वक समझें।

२२. मारी मरे छै किती आत्मा, फिरै जीव परिणामो जी।
द्रव्य आत्मा मारी न मरै, सात मरे छै तांमों जी ॥

मारने से कौनसी आत्माएं मरती हैं ?

एक द्रव्य आत्मा मारने से नहीं मरती, क्योंकि मूल द्रव्य-जीव का परिवर्तन नहीं होता। बाकी सात आत्माएं मारने से मरती हैं क्योंकि भाव जीव में परिणम-परिवर्तन होते रहते हैं।

२३. कवण मरे पोता नी मारी, द्रव्य मरे नहीं कोयो जी।
सात आत्म ते पोता नी, मारी मरे सुजोयो जी ॥

अपने द्वारा मारने से कौन सी आत्माएं मरती हैं ?

एक द्रव्य आत्मा अपने द्वारा मारने से नहीं मरती, शेष सात आत्माएं मरती हैं।

२४. पर नी मारी कवण मरे छै, उत्तर तास विचारो जी।
आठ न मरै पर नी मारी, अदल न्याय अवधारो जी ॥

दूसरे के द्वारा मारने से कौन सी आत्माएं मरती हैं ?

इसका उत्तर यह है कि—आठों ही आत्माएं दूसरे के द्वारा मारने से नहीं मरती। इसका अटल न्याय हृदय में धारण करो।

[क्रमशः]

—:o:—

अहिंसा धर्म का गौरव है, धर्म की आत्मा अहिंसा है। अहिंसा नहीं तो धर्म नहीं। धर्म है तो उसमें अहिंसा रहेगी। अहिंसा को जीवन में उतारो, रग-रग में रमाओ। विश्व भर को आत्म-तुल्य समझो। आप लोगों ने यदि इस सिद्धान्त को अपना लिया, तो न वैमनस्य रहेंगे, न आपसी कलह। चारों ओर सुख शान्ति होगी।

—आचार्य श्री तुलसी

—o—

२२. मुनिश्री खेतसीजी (सतयुगी)

(संयम-पर्याय सं० १८३८-१८८०)

□ मुनि नवरत्नमल

(खण्ड ५, अंक ११-१२ से आगे)

[लय-भीखणजी स्वामी रो शासन .....]

विहरण गुरु का हुआ, भोप ने ली है इधर विदाई जी।
गुरु ने कहा—खेतसी ! फिक्र न करना राई जी ॥२०॥

नहीं पड़ा है विरह तात का जरा न मन में आई जी।
पहले थे वे पिता, आप अब मेरे साई जी[११] ॥२१॥

दोहा

युग स्कंधों पर भिक्षु के, रहता तब तक भार।
मुनिश्री ने ले एक का, आधा दिया उतार[१२] ॥२२॥

[लय-भीखणजी स्वामी रो शासन .....]

गण में विनयी हुए विनय की पुस्तक बड़ी पढ़ाई जी।
छोटे बड़े सभी से रखते प्रीति सवाई जी[१३] ॥२३॥

साञ्जलि कहते 'तहत्' बुलाते जब गुरु वा गुरुभाई जी।
वस्तु हाथ से गिरती इतनी थी लघुताई जी ॥२४॥

कहा भिक्षु ने नहीं बुलाना ले मम नाम दुहाई जी।
तोड़-फोड़ होने से होगी फिर कठिनाई जी[१४] ॥२५॥

विनय साथ में बुद्धि बढ़ी है ऊंची शिखा चढ़ाई जी।
बने किताब ज्ञान की करके खूब पढ़ाई जी[१५] ॥२६॥

गीतक-छन्द

खेतसी के योग से बहुतर हुआ उपकार है।
स्वजन जन में धर्म का फैला बड़ा विस्तार है।

चार दीक्षाएं हुई लौ ज्ञान-दीपक से लगी ।
भगिनियां दो श्वसा-नंदन भतीजी उनकी सगी[11] ।।२७।।

[लय-भीखणजी स्वामी रो शासन.....]

पल-पल में गुरु का भय रखते जो रक्षा की खाई जी ।
मधुर कटुक जल के मिलने से चिंता छाई जी[12] ।।२८।।

सुगुरु दृष्टि अनुकूल मूलतः अपनी दृष्टि बनाई जी ।
उपालंभ कटु शिक्षा में भी थी गहराई जी ।।२९।।

दोहा

रोग अचानक हो गया, सोये हो बेभान ।
बोले 'रूपां' को प्रभो ! खूब पढ़ाना ज्ञान ।।३०।।

सोच न कर उस बहिन का, रख तूं अपना ध्यान ।
स्नेह-मुक्त हो शांति से, भज मन में भगवान्[14] ।।३१।।

---

११. स्वामी जी खेतसीजी स्वामी को दीक्षित कर नाथद्वारा से 'कोठारिया' पधार गये । पीछे से उसी दिन भोपाशाह का देहान्त हो गया । स्वामीजी ने जब यह समाचार सुना तो नवदीक्षित साधु खेतसी से कहा—'तुम्हारे पिता का देहान्त हो गया है, तुम कोई विचार मत करना ।' मुनि खेतसी ने विनय पूर्वक उत्तर देते हुये कहा—गुरुदेव ! मैं संसार में था, तब तक वे मेरे पिता थे और अब आप मेरे पिता है । वस्तुतः मेरे तो पिता का वियोग हुआ ही नहीं, फिर चिन्ता क्यों करूं[15] ?

१२. मुनि खेतसीजी दीक्षित हुए तब तक स्वामीजी अपने एक कंधे पर उपकरण आदि तथा एक कंधे पर पुस्तकें रखते थे । फिर मुनि श्री खेतसीजी उनके कंधे की पुस्तकें लेने लगे । **(अनुश्रुति के आधार से)**

---

(१५) 'श्रीजीद्वारा' सैहर थी रे, खेतसीजी भीक्खू साथ ।
विहार करी आधा चालीया रे, लारै तो चल गयो तात ।।
गांम 'कोठारीयै' पधारीया रे, तिणहिज दिवस सुजोग ।
खेतसीजी सुणी वारता रे, जनक पोहता परलोक ।।
पूछै भीक्खू स्वामजी रे, तूं मन में म आंणजे काय ।
खेतसीजी कर जोड़नै रे, वांण वदै सुखदाय ।।
मोनै तो आप आवी मिल्या रे, जो चल्या संसारी बाप ।
म्हारै तो विरह पडीयों नहीं रे, हूं क्यांनै करूं संताप ।।
हूं संसार मांहै रह्यो हुंतो रे, तो रोवणो पड़तो मोय ।
सो हूं तो छूटो दुःख थकी रे, हम बोल्या अवलोय ।।

(सतजुगी चरित्र, ढा० ३ गा० ८ से १२)

---

१३. उनका व्यवहार बड़ा मधुर और हृदयग्राही था । छोटे बड़े साधु जब लेखन करते, तब वे अपने हाथ में पानी का पात्र लेकर उन्हें पानी पिलाते । संत उन्हें कहते कि आप यह क्या कर रहे हैं, तो वे उत्तर देते—'आप लोग तो लिपि-कार्य कर रहे हैं, मैं तो लिखना-पढ़ना नहीं करता, अतः मैं इतना सा कार्य करूं तो इसमें क्या विशेषता है ?'' **(अनुश्रुति के आधार से)**

१४. मुनि खेतसीजी बड़े विनीत प्रकृति के साधु थे । स्वामीजी के प्रति उनकी अगाध श्रद्धा थी । उनको जब स्वामीजी तथा अन्य दीक्षावृद्ध मुनि किसी कार्य के लिए निर्देश देते तो वे उसे हाथ जोड़कर स्वीकार करते और उसी समय उसे पूर्ण करने में लग जाते । उनकी इस उत्कृष्ट नम्रता और सरलता ने सबके हृदय में उनके प्रति एक महत्त्व-पूर्ण स्थान बना दिया । स्वयं स्वामीजी भी उनकी सहज विनम्रता से बहुत प्रभावित थे । वे सतयुग के किसी उच्च कोटि के साधक की तरह निर्मल स्वभाव के धनी थे, अतः संघ में स्वामीजी ने उनका नाम सतयुगी रख दिया । ख्यात में लिखा है—

"भिक्षु री मुरजी घणी आराधी, शासन में नाम सतयुगी बाज्या ।

उनके लिए कहा जाता है कि स्वामीजी जब उन्हें किसी कार्य के लिए पुकारते, तब यह देख लिया करते थे कि उनके हाथ में पात्र आदि कोई गिरकर टूट जाने वाली वस्तु तो नहीं है तथा उन तक कोई निर्देश पहुंचाते समय भी निर्देश ले जाने वाले को स्वामीजी सावधान कर दिया करते थे कि निर्देश सुनाने से पहले यह देख लेना कि हाथ में कोई वस्तु तो नहीं है । संभवतः स्वामीजी के द्वारा आह्वान करने तथा निर्देश देने पर हाथ जोड़ने की शीघ्रता में वे अपने हाथ में रही हुई वस्तु को भूल जाते थे और वह गिरकर टूट जाती थी । कई बार ऐसा होने से स्वामीजी आदि सभी यह ध्यान रखा करते थे । **(अनुश्रुति के आधार से)**

१५. मुनि खेतसीजी की विनय-वृद्धि के साथ-साथ बुद्धि भी उत्तरोत्तर विकसित होती गई । उन्होंने स्वामीजी के सान्निध्य में विद्याध्ययन करके सैद्धान्तिक और तात्त्विक ज्ञान में अच्छी प्रगति की । सूक्ष्म-सूक्ष्म रहस्यों की बहुत जानकारी की । विनय के साथ विद्या और फिर विवेक जागृति से उनकी प्रतिष्ठा संघ में प्रतिदिन बढ़ती चली गई[16] ।

१६. मुनि श्री खेतसीजी के सहयोग से चतुर्विध संघ में बहुत उपकार हुआ । उनके निकटतम परिवार की चार दीक्षाएं हुईं । उनकी दो बहिनें—साध्वी श्री कुशालांजी (४६)

---

(१६) भण्या गुण्या घणाइज भाव सूं रे, अनेक कला सीखा असमान रे ।
(खेतसी गुण वर्णन, ढा० ८ गा० ४)

झीणी रहिसा अति घणी, स्वाम भिक्खू रे पास ।
खेतसीजी सीख्या घणी, अर्थ अनोपम तास ।।
(सतजुगी चरित्र, ढा० ९ दो० ५)

भीखू गुर समीपै भण्या रै, सूत्र सिद्धान्त चर्चा बोल रे ।
विनौ विवेक जस बहु वध्यो रे, तीखो तोल अमोल रे ।।
(सतयुगी पंचढालियो, ढा० १ गा० ११)

और रूपांजी (३७) तथा भाणेज—मुनि रायचन्दजी (४१) और भतीजी—साध्वी श्री दोलाँजी (६३) ने संयम ग्रहण किया[१७]।

१७. एक दिन 'काफरला' (मारवाड़) गांव में मुनि खेतसीजी तथा हेमराजजी गोचरी को गये। वहाँ धोवन पानी लिया। फिर अन्य घर में धोवन पानी लिया और बिना चखे ही भूल से उसमें मिला दिया। तत्काल खेतसी स्वामी ने हेमराज जी से कहा - हेमजी ! आज चखे बिना ही धोवन शामिल हो गया है, अगर वह खराब निकलेगा तो स्वामीजी उलाहना देंगे, उन्होंने हमको पहले से ही कह दिया था—'संतो ! धोवन पानी कहीं मीठा मिलेगा और कहीं खारा, इसलिए उसे चखकर अलग-अलग रखना है।' फिर उन्होंने स्थान पर आकर उस पानी को चखा तो वह मीठा ही निकला, तब उनका दिल आश्वस्त हुआ। इस प्रकार वे पल-पल में स्वामीजी के कथन का ध्यान रखते थे। (भिक्षु दृष्टान्त, १७०)

१८. सं० १८५५ में स्वामीजी का चातुर्मास पाली में था। वहां एक दिन रात्रि के समय मुनि खेतसीजी को उलटियां और दस्त होने लगे। एक बार जब वे बाहर गये तो बीच में ही मूर्च्छित हो गये। स्वामीजी ने तत्काल मुनि हेमराजजी को जगाया और कहा---'खेतसी मार्ग में गिर गया है, अतः चलो, उसे एक ओर सुला दें।'

मुनि हेमराजजी उठे और स्वामीजी के साथ मिलकर मुनि खेतसीजी को अंदर ले आये। उन्हें अच्छी तरह सुलाने के पश्चात् स्वामीजी ने मुनि हेमराजजी से कहा—'संसार की माया कितनी कच्ची है कि खेतसीजी जैसा व्यक्ति भी देखते-देखते यों कुम्हला गया।'

थोड़ी देर पश्चात् मुनि खेतसीजी सचेत हुए, तब स्वामीजी से बोले—'आप पीछे से 'रूपांजी' (३७) (जो उनकी संसार पक्षीया बहिन थीं, और जिन्होंने सं० १८४८ में उनके बाद दीक्षा ली थी। दीक्षा के पूर्व रूपांजी को 'खोड़े' के बंधन में रहना पड़ा था, आखिर २१ दिनों के बाद वह 'खोड़ा' स्वयं टूट गया था।) को पढ़ा कर तैयार करदेना।"

स्वामीजी ने कहा 'इस समय तूं रूपांजी की चिन्ता को छोड़कर भगवान् का स्मरण कर।' मुनि खेतसीजी ने स्वामीजी के वचनों को शिरोधार्य किया और आत्म-चिन्तन में लीन हो गये। बाद में उनका रोग भी शीघ्र ही ठीक हो गया।

(भिक्षु दृष्टान्त, २५३)

(१७) सतजुगी रा साहज सूं और हुवो उपगार।
साध साधवी सोभता, श्रावक श्रावका सार॥
दोनू बहिनां दीपती, छोड़ी निज भरतार।
कुसालांजी रूपांजी कही, पूज उतारी पार॥
भाणेजो भल भाव सूं, वय बालक वयराग।
दस वरसा रै आसरै, रायचंद बडभाग॥

(सतजुगी पंच ढा०, ढा० ३ दो० १ से ३)

हेम सुता दोलांजी नामो, सतजुगी नी भतीजी तामो।
धार्यो चारित गुणमणि धामो रे।

(सतजुगी चरित्र, ढा० ८ गा० २)

—०— [क्रमशः]

महावीर का अपरिग्रह : वर्तमान संदर्भों में

□ डॉ० निज़ाम उद्दीन

भगवान् महावीर का जन्म लगभग ढ़ाई हजार वर्ष पूर्व बिहार के वैशाली राज्य में राजा सिद्धार्थ के यहाँ हुआ था। उन्होंने मानवता के उद्धार के लिए पाँच सिद्धान्तों या महाव्रतों का प्रतिपादन किया—(१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) ब्रह्मचर्य (५) अपरिग्रह। यह माना कि उनके युग में और हमारे युग में लगभग ढ़ाई हजार वर्षों का एक बहुत लम्बा अन्तराल है, परन्तु यदि हम आज देश की सामाजिक या आर्थिक परिस्थितियों पर दृष्टिपात करें, राष्ट्रीय समस्याओं का पर्यवेक्षण करें और विश्व की विनाश-कगार पर खड़ी स्थिति का अवलोकन करें तो हम अपने आपको, समाज को, देश को और विश्व को महावीर-युगीन परिस्थितियों में पाते हैं। आज भी वैसी ही हिंसा है, घृणा-द्वेष है, जातीय भेदभाव है, आर्थिक विषमता है, वर्ग-संघर्ष है, कामुकता और वासना है, अशांति और तनाव है। मनुष्य अवश्य चाँद पर कदम रख चुका है, परन्तु उसे धरती पर चलना नहीं आता। उसकी धर्मपरायणता स्वार्थ में भस्म हो गई है, उसकी मानवता 'स्व' के घेरे में बंधी रहती है, उसके चरित्र की आभा धूमिल पड़ गई है, उसके कर्मों से दूसरों का हित नहीं, अहित होता है। वह समाज में रहकर समाज से दूर है। उसके हृदय और बुद्धि में कोई तालमेल नहीं, उसके कहने और करने में कोई सामंजस्य नहीं, वह बुरी तरह विषमता के जाल में फंसता जा रहा है, इसीलिए दुखी है, अशांत है।

'परस्परोपग्रहो जीवानाम्'—अर्थात् परस्पर उपकार करते हुए जीना ही वास्तविक जीवन है। महावीर का यह कथन हमारे लिए आज भी अनुकरणीय है। इस संसार में न जाने कितने प्राणी हैं। हमारे चारों ओर अनेक मनुष्य हैं, पशु-पक्षी हैं। उनके प्रति भी हमारे कुछ कर्तव्य हैं, उन्हें साथ लेकर यदि हम चलें तो कितना अच्छा हो, उन्हें साथ लेकर यदि हम काम करें, खायें-पीयें, हँसें-खेलें तो यह धरती न जाने क्या बन जाय ! बस हम मानव बन जायें तो संसार को बदल कर रख दें। आज जब चारों ओर हिंसात्मक घटनाएँ देखते हैं तो यकीन नहीं होता कि हम महावीर-गौतम के देश में रहते हैं। क्या यह गांधी का देश है ? महावीर के सिद्धान्तों में अपरिग्रह का स्थान पाँचवाँ है परन्तु इसे जीवन के, मनुष्य के, समाज के विकास का, उनके उन्नयन का हम प्रथम सोपान मानेंगे। इसी के द्वारा हम दूसरे सोपानों पर जमा-जमा कर पैर रखते हुए अहिंसा के उच्च शिखर पर पहुँच सकते हैं। अतः अहिंसा की समुपलब्धि के लिए आवश्यक है कि अपरिग्रह व्रत को

* प्रोफेसर व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, इस्लामिया कॉलेज, श्रीनगर-२ (काश्मीर)

धारण कर। महावीर ने हमें अर्थजन्य विषमता को—जातीय या वर्गभेद को मिटाने के लिए अपरिग्रह का सूत्र दिया, अचार्यव्रत की विचारधारा दी। उन्होंने लोभ-वृत्ति को रोकने के लिए अस्तेय व्रत का विधान सामने रखा और आदेश दिया कि सद्गृहस्थी को चोरी का माल नहीं खरीदना चाहिए, चोरी के माल के लोभ से किसी की सहायता न करनी चाहिए, चोर की भी सहायता नहीं करनी चाहिए, नाप-तोल में बेईमानी न करें, राज्य द्वारा निषिद्ध (जैसे शराब, तस्करी आदि) व्यवसाय न करें और न ही असली में नकली वस्तु मिलाकर उसे कम मूल्य पर बेचकर पाप के भागी बनें। महावीर ने स्पष्ट कहा है—**'असंविभागी न हू तस्स मोक्खो'** अर्थात् जो असंविभागशील है, अपनी अर्जित वस्तुओं को दूसरों में संविभाजित नहीं करता, उसे मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। अतः अपरिग्रह ही मोक्ष-मार्ग है।

दक्षिण के महान् संत कवि तिरुवल्लुवर ने एक स्थान पर कहा है - "धोखा देकर, दगाबाजी से धन जमा करना बस ऐसा है जैसा कि मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी भर कर रखना। जो धन निष्कलंक रूप से प्राप्त किया जाता है उससे धर्म और आनन्द का स्रोत बह निकलता है।" महावीर ने धन कमाने को बुरा नहीं कहा। धनार्जित किये बिना हमारा काम नहीं चलेगा, समाज का उत्थान नहीं होगा, देश की प्रगति नहीं होगी, लेकिन लूट-खसोट करना, खाने-पीने की वस्तुओं में मिलावट करना निन्दनीय है, समाज और देश के हित में नहीं है, मानवता के हित में नहीं है। महावीर का धर्म मानव-धर्म है इसलिए उन सब वस्तुओं के परिग्रह का यहाँ निषेध है, जिनसे मानवजाति का अहित हो। मनुष्य के लिए, गृहस्थी के लिए उन्होंने 'परिग्रह परिमाण' की घोषणा की, अर्थात् सीमित मात्रा में आवश्यकतानुसार वस्तुओं का संग्रह करना मनुष्य और समाज के लिए हितकर है। परन्तु लोभवृत्ति की उन्होंने निन्दा की, क्योंकि लोभ पाप का मूल है, यह अहिंसा की जननी है, अस्तेय की माँ है। महावीर ने कहा—

वियाणिया दुक्खविवड्ढणंधणं, ममत्तबन्धं च महद्भयावहं।
सुहावहं धम्मधुरंअणुत्तरं, धोरेज्ज निव्वाण गुणावहं महं।

अर्थात् धन को दुख बढ़ाने वाला, ममत्व बन्धन का कारण और महाभयावह जानकर उस सुखावह, अनुपम और महान् धर्मधुरा को धारण करो, जो निर्वाण-गुणों को वहन करने वाली है।

कबीर के शब्दों में महावीर के अपरिग्रह की यह परिभाषा हो सकती है। कबीर भगवान् से प्रार्थना-याचना करते हैं—

"साईं इतना दीजिए जामे कुटुम समाय,
मैं भी भूखा न रहूं साधु न भूखा जाय।"

क्या हम कभी सोचते हैं कि हमारे पड़ौसी कितने सुखी-दुखी हैं? क्या हम उनके अभावग्रस्त जीवन में सहारा बन सकते हैं? क्या हमारा धनसंग्रह उनकी दरिद्रता का कारण नहीं? मनुष्य धनार्जन से महान् नहीं बनता, त्याग व बलिदान से महान् बनता है। हमें, हमारे देशवासियों को, धनार्जन में अंधे लोगों को सोचना चाहिए कि यह भौतिकता

हमारा कितना अनर्थ कर रही है! हमें धर्म और अध्यात्म के मार्ग से विचलित करने वाली यही भौतिकता है, परिग्रहवृत्ति है। हमें पशु-वृत्ति की ओर ले जाने वाली यही परिग्रह वृत्ति है। हमें घोर हिंसक, क्रूर मनुष्य बनाने वाली यही परिग्रह वृत्ति है। कहीं बोनस के लिए सरकारी कर्मचारी, मिल-मजदूर हड़ताल करते हैं तो कहीं दिनदहाड़े बसों को लूटा जाता है, महिलाओं के आभूषण छीने जाते हैं, चोरी डकैतियाँ की जाती हैं, करों की चोरी की जाती है, तस्करी की जाती है, वस्तुओं में मिलावट की जाती है, और अनुचित तरीके अपनाकर अथवा घूंस लेकर धन एकत्रित किया जाता है। लोगों की त्यागवृत्ति संग्रहवृत्ति में, प्रेमभावना घृणा में, और मानवता दानवता में बदल गई है। हम आत्मिक सम्पदा से खाली हैं। महावीर ने मनुष्य की मुक्ति के लिए **'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः'** का मूलमंत्र दिया। यहाँ दर्शन, ज्ञान और चारित्र की त्रिवेणी प्रवाहित कर मानवता के लिए मोक्ष का मार्ग प्रशस्त किया। मुक्ति का यह मार्ग सभी व्यक्तियों एवं राष्ट्रों ने लिए उपयोगी है, अनुकरणीय है। इन तीन रत्नों की प्राप्ति के लिए हमें मन-सागर का मंथन करना होगा, अहिंसा और अपरिग्रह के दोनों नेत्रों से समान रूप में प्रत्येक वस्तु का पुनराविष्करण करना होगा।

'महाभारत' में आया है कि तप से ब्राह्मण बना है, जाति निर्मूल और अकारण है। जयघोष मुनि ने कहा था—"कर्म से ब्राह्मण होता है, कर्म से क्षत्रिय होता है, कर्म से वैश्य और कर्म से ही शूद्र होता है, जन्म से नहीं"। यही बात हजारों वर्ष पूर्व महावीर ने कही थी—

कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होइ सुद्दो हवइ कम्मुणा॥

उत्तराध्ययन, २५/३१

भगवान् महावीर ने मात्र बाह्य-वेश धारण करने वालों पर तीक्ष्ण प्रहार करते हुये कहा था कि—केवल सिर मुंड़ा लेने से कोई श्रमण नहीं होता, 'ओम्' का जप करने मात्र से कोई ब्राह्मण नहीं होता, केवल अरण्य में रहने से और कुश का चीवर पहनने मात्र से कोई तापस नहीं होता, अपितु समभाव की साधना करने से श्रमण होता है, ब्रह्मचर्य के पालन से ब्राह्मण होता है, ज्ञान की आराधना—मनन करने से मुनि होता है, तप का आचरण करने से तापस होता है—

न वि मुण्डिएण समणो न ओंकारेण बम्भणो।
न मुणी रण्णवासेणं कुसचीरेण न तावसो॥
समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो।
नाणेण य मुणी होइ तवेण होइ तावसो॥

— उत्तराध्ययन, २५/२९-३०

अपने को ब्राह्मण मानकर दूसरे को शूद्र समझकर मनुष्य का अनादर करना कितना घिनौना और पापमय है! अपनी जाति को, धर्म को दूसरी जाति या धर्म से श्रेष्ठतर

समझना, दूसरों को घृणा की दृष्टि से देखना भी परिग्रह है। इसे हम **'जाति का परिग्रह'** कहेंगे, **'धर्म का परिग्रह'** कहेंगे। जाति और धर्म के परिग्रह से कितना अनिष्ट हो रहा है यह किसी से छिपा नहीं। हरिजनों, गड़रियों आदि के घरों मे आग लगाई जाती है, उन्हें जीवित आग में फेंका जाता है। हिन्दू मुसलमानों के साम्प्रदायिक दंगे अलीगढ़, मुजफ्फर नगर, संभल, जमशेदपुर आदि में जो गतवर्षों में हुए, वे सभी धर्म और जाति के आधार पर हुए। उस समय मालूम नहीं वह पाशविक और राक्षसीवृत्ति हमारे अन्दर कहाँ से आ जाती है? हम क्यों भूल जाते हैं कि हम पैगम्बर मोहम्मद, गौतम, महावीर, नानक के अनुयायी हैं, जिन्होंने अहिंसा, शाँति, प्रेम और भाईचारे का संदेश सकल विश्व को—संपूर्ण मानवता को दिया। महावीर ने अपने युग में जातीय एवं वर्ग एकता पर बल दिया, उनके 'समवशरण' में विभिन्न वर्गों, जातियों, धर्मों और सम्प्रदायों के लोग एक साथ बैठ कर प्रवचन-लाभ प्राप्त करते थे। उनके युग में भी शूद्र और चाण्डाल थे। उन्होंने हरिकेशी जैसे चाण्डाल को सहर्ष गले लगाया। समाज में दास-प्रथा का उच्छेदन उन्होंने किया। चन्दनबाला को श्रमण धर्म में दीक्षित कर नारी जाति का सम्मान बढ़ाया, उसे एक परिग्रह की वस्तु नहीं समझने दिया। आज तक हमारे यहाँ बन्धक मजदूरों की प्रथा रही, नारी को तो आज भी परिग्रह की वस्तु, भोग-विलास की सामग्री माना जाता है। महावीर ने उपदेश दिया था—"मनुष्य के द्वारा मनुष्य को दास बनाया जाना बन्द होना चाहिए; कितनी बर्बर और असभ्य बात है कि मनुष्य मनुष्य को दास बनाये! संसार के सभी प्राणी स्वतंत्र हैं, कहीं भी कोई प्राणी किसी प्राणी को दास नहीं बना सकता। यह दासता या दास-प्रथा प्राणों की मूल सत्ता के प्रति चुनौती है और उसके मूल व्यक्तित्व का हनन है।"

उमास्वामी ने परिग्रह को **'मूर्च्छा परिग्रहः'** कहा है; अर्थात् वस्तु के प्रति मनुष्य का ममत्व ही परिग्रह है। ममत्व में मनुष्य की दृष्टि 'स्व' पर ही केन्द्रित रहती है। अतः परिग्रह में दृष्टि की संकीर्णता है, उदारता नहीं। हम अपने लिए ही सब कुछ करते हैं दूसरों के लिए कुछ नहीं कर पाते, एक प्रकार से परिग्रहांध होकर हम उस सांप के समान हो जाते हैं जो अपनी केंचुली में लिपटा अंधा और अशक्त बना रहता है। हमें परिग्रह की केंचुली को उतारना होगा, अपनी दृष्टि को, विचार को, ज्ञान को सम्यक् बनाना होगा। परिग्रहांध होकर हम आध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त नहीं कर सकते, जिसके द्वारा हम अपने व्यक्तित्व का, आत्मा का विकास करते हैं। महावीर एक राजकुमार थे, वैशाली राज्य का अपार वैभव उनके पैरों में पड़ा था, परन्तु उन्होंने महाभिनिष्क्रमण के द्वारा अपरिग्रह का रास्ता अपनाया। हमारे युग में गांधी जी एक सम्पन्न परिवार से आये थे, बैरिस्टर थे, परन्तु जब स्वतंत्रता के पथिक बने तो अपरिग्रहव्रत धारण कर महावीर की परम्परा का, उनके आदर्शों का अनुकरण किया। नेहरू जी ने समाजवादी शासन व्यवस्था या समाज वादी समाज-व्यवस्था को अपना कर महावीर की ही अपरिग्रहवादी विचारधारा को आगे बढ़ाया। आज हम महावीर के इस अपरिग्रहवाद को जीवन में उतार कर राष्ट्रीय चरित्र का विकास कर सकते हैं। हमारे देश में साधारण मनुष्य से लेकर नेता लोगों तक में राष्ट्रीय

चरित्र का अभाव पाया जाता है और यह एक खटकने वाली बात है, अशुभ बात है। देशोत्थान के लिए हमें व्यक्तिगत स्वार्थों को छोड़ना है, शोषण की कुवृत्ति को त्यागना होगा। 'इच्छापरिमाणव्रत', जिसका उपदेश महावीर ने दिया था, वह हमारे अन्दर कहाँ है? क्या हमारे समाज में दहेज की कुप्रथा परिग्रह का उदाहरण नहीं? क्या इसकी भेंट अनेक नव विवाहिता युवतियां नहीं चढ़ाई जाती, उन्हें मिट्टी का तेल छिड़क कर नहीं जलाया जाता? हमें पुनः महावीर के उपदेशों को पकड़ना होगा, उनकी शरण में जाना होगा, उन्हें जीवन में उतारना होगा। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने एक बार कहा था—"लगभग सभी लड़ाइयाँ जमीन, सोना, अन्न अथवा खनिज हथियाने के लिए लड़ी गईं। आज दुनिया को मालूम पड़ रहा है कि शांति के साथ-साथ मानसिक शान्ति तभी आ सकती है जब हम स्वार्थपरता से छुटकारा पायें। आत्मिक विकास के बिना हम आर्थिक विकास के झगड़ों को नहीं सुलझा सकते। आधुनिकता और विज्ञान का मतलब यह नहीं होता कि हम प्राचीन मूल्यों को छोड़ दें, बल्कि हमारा प्रयत्न तो यह होना चाहिए कि विज्ञान के साथ हम उनका मेल बैठायें। अहिंसा और अपरिग्रह से ही सभ्यता बचाई जा सकती है।'

—:o:—

(पृष्ठ ५ का शेष)

जो व्यक्ति साधना के इच्छुक हैं, वे स्वेच्छा से इस संघ की शरण लेते हैं और इसकी मर्यादाओं के प्रति अपने आपको समर्पित करते हैं। बाध्यता को यहाँ कोई स्थान नहीं है। आचार्य भिक्षु ने मर्यादाओं की शृंखला में एक यह भी मर्यादा दी कि जो गण, मर्यादा और आचार्य के प्रति निष्ठाशील हो, वह गण में रहे, वंचनापूर्वक न रहे। सागर में रहकर कभी मगरमच्छ से विरोध नहीं किया जा सकता। वैसे ही संघ में रहना और आचार्य की आज्ञा और मर्यादा का पालन न करना, यह दोहरी नीति नहीं चल सकती। व्यास जी के शब्दों में—**'धर्मो रक्षति रक्षितः'**—धर्म उसी की रक्षा करता है, जो धर्म की रक्षा करता है। मैं इस बात को **'संघो रक्षति रक्षितः'** इस रूप में दुहराता हूं। संघ उसी की सुरक्षा करता है, जो संघ की सुरक्षा के लिए तत्पर व समर्पित है।

संघ की गरिमा को सुरक्षित रखने का दायित्व न केवल साधुओं पर है, न केवल श्रावकों पर है, बल्कि दोनों पर है। आचार्य भिक्षु के शब्दों में **"साधु नै श्रावक रतनां री माला एक मोटी दूजी नान्ही रे।"**

मैं उपस्थित भाइयों एवं बहिनों से यह कहना चाहता हूं कि आप प्रवाहपाती न बने। इधर-उधर की अफवाहों से अपने मानसिक संतुलन को न खोएं। प्रतिक्षण जागरूकता के साथ प्रतिव्यक्ति इस बात का चिन्तन करे कि मेरे द्वारा कोई ऐसा कार्य न हो जो संघ की गरिमा को कम करे।

संकलनकर्त्री—साध्वी जिनप्रभा

—:o:—

जयाचार्य शताब्दी और तुलसी निधि

□ श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट*

जैन संप्रदाय की वर्तमान शृंखला में तेरापंथ के आदि प्रवर्तक आचार्य संत भिक्षु के बाद जयाचार्य का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है और उनका अपना एक इतिहास है। जयाचार्य ने धर्मसंघ की आधार शिला को सुसंगठित करते हुए उन क्रान्तिकारी परंपराओं का उद्घाटन किया है, जिनमें व्यक्तिगत संपदा का अपना कोई स्थान नहीं है। धर्मसंघ में चरित्र-सम्पन्न वैयक्तिक विकास को प्रमुखता देते हुए परिग्रह मात्र की दृष्टि का जयाचार्य ने सर्वथा प्रतीकार किया है और धर्म-संप्रदायों में अहिंसात्मक समाजवाद की पद्धति को सामूहिक रूप से अग्रसर (मान्य व परिचालित) किया है। इतिहासकारों के लिए यह गंभीरतम शोध का विषय है कि आज से एक सौ वर्ष पूर्व धार्मिक जटिलता और सांप्रदायिक रूढ़िवाद के होते हुए जयाचार्य इन सब बंधनों को तोड़कर ऐसी महान् क्रांति का आविर्भाव कैसे कर सके? क्या उस शताब्दी में राजनीतिक मार्क्स एवं धार्मिक मार्क्स का वैचारिक जन्म एक साथ हो रहा था? हालांकि दोनों की विचार शैली और कार्य-पद्धति में बुनियादी अन्तर है, लेकिन यह सत्य है कि दोनों के सत्य को अपने-अपने दृष्टिकोण से समझने की युगीय आवश्यकता है।

जयाचार्य शताब्दी

यह प्रसन्नता का विषय है कि धार्मिक जगत में अहिंसात्मक समाजवाद का आदर्श प्रस्तुत करने वाले क्रान्तिकारी जयाचार्य की निर्वाण शताब्दी मनाने का सुअवसर अगले वर्ष ही प्राप्त हो रहा है। जैन-दर्शन में जन्म से अधिक निर्वाण का महत्त्व है। गांधीजी के शब्दों में व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को सही रूप से तौलने का अवसर ही उसकी मृत्यु के बाद होता है। लेकिन जैन-दर्शन तो उससे भी आगे जाता है, जहाँ उसका मूल्यांकन ही उसकी मुक्ति से किया जाता है। जयाचार्य का यह मुक्ति-पर्व सौ वर्षों के बाद भी

*गांधी सेवा सदन, राजसमन्द (राजस्थान)

उन गौरवशाली आध्यात्मिक परंपराओं के दिशा-दर्शन में पुनः एक नवीन क्रान्ति की चुनौती लेकर प्रस्तुत हो रहा है। क्या हम उसे झेल सकेंगे?

योजना-प्रतियोजना

जयाचार्य शताब्दी को सुयोजित रूप देने के लिए युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में जयाचार्य साहित्य-लेखन एवं शोध के साथ व्यापक आध्यात्मिक संयोजना की जा रही है, वहाँ उसे सुसंगठित सामाजिक एवं राष्ट्रीय रूप देने के लिए "श्रीमद् जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समिति" का गठन हुआ है। इस नौ सदस्यीय समिति के श्री धर्मचन्दजी चोपड़ा संयोजक हैं, जो तेरापंथ समाज के उत्साही युवा प्रवक्ता हैं। उनके साहस की प्रशंसा की जानी चाहिए कि समिति का संगठन हुए बहुत ही अल्प समय हुआ, लेकिन विचार चर्चा के बाद उन्होंने जयाचार्य शताब्दी को राष्ट्रव्यापी रूप देते हुए इस अवसर के लिए योजना-प्रतियोजनाओं की बहुलता प्रस्तुत कर दी है। योजनाओं एवं कल्पनाओं के नाम पर मैं स्वयं इस समाज में अत्यधिक चर्चा का व्यक्ति रहा हूं। कहीं-कहीं बदनाम भी रहा हूं, लेकिन मुझे खुशी होती है कि पूर्व से भी अधिक अच्छे रूप में जिस तरह जयाचार्य शताब्दी की योजना-प्रतियोजना प्रस्तुत की गई है, उसमें बन्धुवर श्री चौपड़ा ने अपने को सर्वाधिक कल्पनाशील एवं सृजनशील व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। यह हम सबका सौभाग्य है कि जयाचार्य शताब्दी को अमली रूप देने के लिए भावना एवं सृजन से प्रेरित युवा-शक्ति का नेतृत्व हमें मिला है। मुझे विश्वास है कि वे अपने मिशन को आगे बढ़ाने में सफल होंगे, लेकिन इसके लिए हम सबका सक्रिय योग उन्हें मिले, तब ही इस महान् कार्य की सफलता सन्निहित है।

आकांक्षा-महत्त्वाकांक्षा

जयाचार्य शताब्दी पर प्रस्तुत योजना के प्रारूप पर किसी का कोई दो मत नहीं हो सकता। योजना राष्ट्रव्यापी स्तर को लिए हुए आकांक्षा एवं महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित है, लेकिन जयाचार्य शताब्दी के गौरव के अनुकूल है। प्रश्न केवलमात्र यह है कि सृजनात्मक रूप के साथ जितना इसे प्रसारात्मक आधार दिया गया है, क्या हम इतनी मशीनरी जुटा पाने में सफल होंगे? जहां तक साधनों का सवाल है, वहां तो समिति में सम्मान्य सदस्यों की सूची को देखते हुए विश्वास है कि इसमें कठिनाई संभवतः नहीं आनी चाहिए। अपेक्षा यह है कि कार्यकारी शक्ति भी उतनी ही जुटे और वह कारगर दिशा में मुड़े, तब ही इस आकांक्षा-महत्त्वाकांक्षा से पल्लवित रूपरेखा को साकार रूप दिया जा सकता है। योजना के अनेक बिन्दु हैं। तदनुसार उसके पृथक्-पृथक् विभाग बन सकते हैं, लेकिन उन सब पर व्यावहारिक रूप से विचार करने का अवसर अभी नहीं है। वर्तमान में तो योजना की प्रारंभिक भूमिका को संगठित करने में जुट पड़ना है।

सामयिक अपेक्षा

जयाचार्य शताब्दी पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में जयाचार्य साहित्य का जितना संकलन, संपादन एवं शोधन किया जा रहा है, निस्संदेह वह उस

अवसर के लिए एक मूल्यवान् एवं प्रेरणादायी भेंट होगी, लेकिन युग की सामयिकी अपेक्षा है कि जयाचार्य ने तत्कालीन धार्मिक संगठन एवं गिरते हुए आध्यात्मिक मूल्यों को नई दिशा देकर अहिंसात्मक समाजवाद का जो आदर्श प्रस्तुत किया, उस पर सर्वाधिक मौलिक एवं अधिकार-पूर्ण भाषा में एक शोध-ग्रन्थ का लेखन व प्रकाशन किया जाय। अच्छा हो कि इस प्रकार के शोधपूर्ण ग्रन्थ के लिए समिति एक विशेष प्रकार के पुरस्कार की घोषणा करे और उसका लेखन एवं संपादन भी ख्यातिप्राप्त साहित्यकार के हाथों निष्पक्ष एवं तटस्थ रूप से हो। यदि इस महत्तर कार्य को हम समय पर परिपूरित कर सकें तो निस्संदेह जयाचार्य शताब्दी की यह एक स्थायी और महत्त्वपूर्ण उपलब्धि होगी। यह भी हो सकता है कि जयाचार्य पर शोध-पूर्ण ढंग से लिखित यह ग्रन्थ आगे जाकर विचारकों के लिए मुख्य दृष्टि-बिन्दु बन जाय।

चुनौती क्या है ?

जैसा कि मैंने ऊपर कहा है कि जयाचार्य-क्रान्ति के सौ वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी क्रान्ति का प्रतिप्रश्न वैसे ही खड़ा है, बल्कि वह इस प्रश्न के उत्तर में एक और क्रान्ति की मांग कर रहा है। क्या जयाचार्य शताब्दी का यह महापर्व इसका समाधान दे सकेगा ? इसका उत्तर उनके चरण-पथ पर चलने वाले अनुयायियों को देना है और जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समिति को इसका दिशा-दर्शन करना है। जयाचार्य ने अपने धर्मसंघ में परिग्रह मात्र की मर्यादा को व्यक्ति अर्थात् साधु से पृथक् करते हुए समाजवादी दृष्टिकोण का प्रादुर्भाव किया। प्रश्न है—श्रावक समाज ने उसका कितना अनुकरण किया, जबकि साधु के पास परिग्रह के नाम पर है भी क्या ? अपनी पातरी, पोथीनुमा कुछ पन्ने, और अकिंचन मात्र वस्त्र, लेकिन उसे भी उन्होंने साधु का नहीं, संघ का माना। यहां तक कि उनका अपना सब कुछ भी समर्पित हो चला। अनुयायी वर्ग में ऐसा समर्पित जीवन देखने को भी नहीं मिलता। समाजवाद का अनुगमन तो दूर, उसके द्वार तक पहुंचना भी उनके लिए अभी कोसों दूर है।

ट्रस्टीशिप का उभरता प्रश्न

मुझे याद आता है, जब श्री सुगनचंद आंचलिया अ० भा० अणुव्रत समिति के अध्यक्ष थे, उस समय अणुव्रत के आदर्शों को समाजवादी ढंग से कार्यान्वित करने के लिए विशेषतः औद्योगिक एवं व्यवसायी वर्ग के आधार पर ट्रस्टीशिप का एक उभरता हुआ प्रश्न उपस्थित हुआ था। इसी प्रश्न के सन्दर्भ में तीन बड़ों की एक महत्त्वपूर्ण बैठक कलकत्ता में आयोजित हुई थी, उसके नोट्स अब भी मेरे पास सुरक्षित हैं। लोक नायक श्री जयप्रकाश नारायण एवं अणुव्रत प्रवक्ता श्री जैनेन्द्रजी एवं आंचलिया जी ने विचार चर्चा के बाद सर्वाधिक प्रयत्न किया कि व्यवसायी वर्ग के सहयोग से ट्रस्टीशिप के आधार पर एक ऐसे बृहत्तर उद्योग का संचालन किया जाय, जिसमें सहस्रों व्यक्तियों का श्रम लगे लेकिन सब इसे अपना मानकर चलें। श्रम करने वाले और पूंजी लगाने वाले— दोनों का उस पर समान अधिकार हो। पूंजी लगाने वाले यह समझें कि मैं इसका ट्रस्टी मात्र हूं

और श्रमिक यह मानकर चले कि यह मेरा अपना संस्थान है। आय और पारिश्रमिक का उसी अनुपात से वितरण हो और सबको समान सुविधा उपलब्ध हो। संक्षेप में पूंजी का दुरुपयोग नहीं हो तो किसी के श्रम का शोषण भी न हो, और इस प्रकार वहां नये नैतिक मूल्यों की आधार-शिला के साथ अणुव्रत समाज की संरचना हो और वह आगे जाकर अन्य लोगों के लिए भी एक सजीव उदाहरण बने। आंचलिया जी के निधन के साथ ही यह बात उठ चली है, लेकिन जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समिति ने "तुलसी निधि" की स्थापना के सुझावों का एक परिपत्र प्रेषित कर फिर उसे ताजगी दे दी है।

तुलसी निधि

जयाचार्य शताब्दी पर समिति के संयोजक ने लोक कल्याणकारी कार्यों की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करते हुए "तुलसी निधि" के संकलन का एक सामयिक और रचनात्मक सुझाव प्रस्तुत किया है। जयाचार्य शताब्दी केवल समारोह की परिपूर्ति बनकर न रह जाय अथवा प्रचार की भूमिका तक सिमट न जाय, इस दृष्टि से इस ऐतिहासिक अवसर पर "तुलसी निधि" के गठन का सुझाव न सिर्फ लोक कल्याणकारी, अपितु रचनात्मक दृष्टि से भी स्वागत योग्य है। बहुत से लोगों का प्रश्न हो सकता है कि जयाचार्य की आध्यात्मिक भूमिका में भला अर्थ का क्या काम ? धर्म के पवित्र प्रसंग पर अर्थ को इतना क्यों जोड़ा जा रहा है, और क्यों कर इसे इतना महत्त्व दिया जा रहा है ? लेकिन हम न भूलें कि हम सब अर्थ की दुनियां में जी रहे हैं। अर्थ के बिना हमारा कोई काम नहीं चलता। जबकि सांसारिक कार्यों की मूलभूत भूमिका ही अर्थ पर खड़ी है तो ऐसे पुनीत अवसर पर लोक कल्याणकारी कार्यों की पुनीत शृंखला क्योंकर वंचित रहे ? श्रावक समाज द्वारा संस्थापित "तुलसी निधि" की यह शृंखला संभवतः गौरवपूर्ण ही होगी। गौरवपूर्ण इसलिए भी होगी कि व्यक्ति द्वारा संचित परिग्रह की राशि एक में न सिमट कर अनेक में विसर्जित होगी, और वह "तुलसी निधि" के रूप में समर्पित होगी। आध्यात्मिक दृष्टि से समर्पण एवं विसर्जन की व्याख्या हमने जयाचार्य से सीखी है, लेकिन लौकिक दृष्टि से क्या हम लोक-जीवन का एक आदर्श रूप नहीं दे सकते ? वर्तमान युग की आवश्यकता को स्वीकार कर यदि हम परिग्रह से शनैः शनैः ट्रस्टीशिप की ओर जा सकें, तो यह भी एक अपरिग्रह की ओर मुड़ने का मार्ग होगा, और जयाचार्य के शब्दों में —अहिंसात्मक समाजवाद का अनुकरण भी होगा। हम यह न भूलें कि दुनिया की दृष्टि जहां साधु-समाज के उच्च आदर्शों पर अवलंबित है, वहां वह यह भी देख रही है कि उस समाज के अनुयायी उन आदर्शों का किस सीमा तक अनुगमन कर चल रहे हैं ? जयाचार्य निर्वाण शताब्दी पर हमें इसका केवल कथनी से नहीं, अपितु क्रियात्मक उत्तर देना है।

निधि का स्वरूप क्या हो ?

जयाचार्य शताब्दी के संयोजक ने "तुलसी निधि" की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए बिन्दु-बिन्दु रूप से संक्षिप्त निर्देशन दिये हैं, जो लोक कल्याण की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। लेकिन जयाचार्य के साथ एक आध्यात्मिक भूमिका भी जुड़ी हुई है। अतः वह केवल

लौकिक न बने और वह निधि की आध्यात्मिक गरिमा भी प्रस्तुत करे, इसलिए आवश्यक है कि हम उस पर और अधिक गंभीरता से विचार करें।

जयाचार्य की महानता के साथ "निधि" में तुलसी का नाम भी समाहित हो रहा है, वह और भी महान् है। तुलसी ने अपने युग को एक बड़ी देन दी है और वह अणुव्रत आन्दोलन से श्रृंखलित है। अणुव्रत क्रान्ति के रूप में "तुलसी" ने नये नैतिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करने के साथ समाज को एक नैतिक दिशा प्रदान की है। इसलिए "तुलसी निधि" की भूमिका भी इन्हीं नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापन के अनुरूप होनी चाहिए। निधि का यह रूप सामान्य नहीं अपितु असामान्य है और इसी में इसकी गरिमा है। इस गरिमा की रक्षा हमें इसलिए भी करनी है कि जयाचार्य शताब्दी के समायोजन एवं "तुलसी निधि' के रूप में दो-दो महापुरुषों की दिव्यता इसमें समाहित है। ऐसी अवस्था में निश्चित रूप से सामान्य ट्रस्टों से इसका अपना पृथक् से अस्तित्व है और यह अस्तित्व किसी भावना विशेष से उद्बोधित है। वह अनुगमन का प्रतीक नहीं है। अस्तु, आइये हम इसकी संक्षिप्त परिभाषा के साथ इसके प्राणवान् बिन्दुओं पर विचार करें। इस दृष्टि से कुछ और सुझाव भी अपेक्षित होंगे। मेरे सुझावों की यह प्रथम कड़ी है। आवश्यक नहीं है कि यह मान्य ही हों। इन सुझावों के साथ मैंने केवल अपनी विचार-स्वतन्त्रता का उपयोग किया है और संयोजक के आदेश का पालन मात्र किया है।

प्रस्तावना

विषमता से भरे आज के लोक जीवन में चहुं ओर दृष्टि दौड़ाने पर जो दृश्य दिखाई देता है, उसमें राजनीतिक एवं सामाजिक असदाचार के अतिरिक्त गिरते हुए आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का बाहुल्य तथा अनाचार है। दूसरे शब्दों में इसे सब ओर बढ़ता हुआ नैतिक अकाल कहा जा सकता है। भौतिक विषमता एवं अज्ञान से पीड़ित व्यक्ति को ऊपर उठाकर मानवीय मूल्यों के विकास के लिए नैतिक संहिता की जितनी आज समाज को आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नहीं थी।

उद्देश्य

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आध्यात्मिक एवं नैतिक संहिता के आधार पर मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा और विकास करते हुए अहिंसक समाज संरचना करना तथा तदर्थ आन्दोलित एवं सेवाशील लोक शक्तियों को अग्रसर करना "तुलसी निधि" का मुख्य उद्देश्य है।

संभाग

उक्त उद्देश्य की पूर्ति अथवा संरचना हेतु निम्नांकित मुख्य संभाग अर्थात् आधार बिन्दु होंगे—

वैयक्तिक—° मानवीय आदर्शों से प्रभावित एवं सेवाशील व्यक्तियों का नैतिक सम्मान तथा सहयोग।

° आध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यों से प्रेरित परिवारों को उनकी सद् उद्देश्यकारी प्रवृत्तियों की परिपूर्ति में ससम्मान सहायता।

° शोषण, अन्याय, हिंसा, युद्ध, दंगा एवं प्रकृति प्रकोप से पीड़ित व्यक्तियों को मानवीय सहायता।

° वर्ष में एक बार मुख्यतः "तुलसी-जयन्ती" पर कम से कम एक ऐसे व्यक्तित्व का सुनिश्चित निधि समर्पण द्वारा सार्वजनिक सम्मान, जिन्होंने मानवीय जीवन के उच्च आदर्शों एवं सेवाशील प्रवृत्तियों द्वारा समाज का नैतिक मार्गदर्शन किया है।

सामाजिक—° उन संस्थाओं एवं प्रवृत्तियों को सहयोग जो समाज में नैतिक पुनरुत्थान के साथ आध्यात्मिक शिक्षण, शोध तथा तदनुकूल लोक प्रवृत्तियों के विकास में संलग्न एवं उद्देश्य-निष्ठ हैं।

° समाज के उन उपेक्षित बच्चों एवं महिलाओं को सम्मानित एवं नैतिक जीवन जीने के लिए प्रेरणा तथा सहयोग, जो प्रतिकूल परिस्थितियों एवं सामाजिक प्रताड़ना से तिरस्कृत जीवन जीने के लिए विवश हैं।

° वृद्धावस्था में उन लोगों की सहायता जिन्होंने जीवन भर असामाजिक एवं अनैतिक प्रवृत्तियों को अस्वीकार कर सदाचार-पूर्ण वृत्तियों से समाज को प्रभावित किया है।

° समाज में आध्यात्मिक, नैतिक एवं सदाचार-पूर्ण शिक्षा के लिए प्रयत्न तथा तदर्थ प्रतिभावान् एवं अर्थपीड़ित छात्रों को सहायता एवं छात्रवृत्ति से हर संभव सहयोग।

साहित्यिक—° सुन्दर शोधपूर्ण आध्यात्मिक एवं नैतिक ग्रन्थ के प्रकाशन पर संबंधित प्रकाशन एवं साहित्यिक संस्थान को ससम्मान सहयोग एवं पुरस्कार।

° उन लेखकों का सपुरस्कार विशेष सम्मान, जिन्होंने अपने सुलेखन एवं आध्यात्मिक कृतियों से समाज को नैतिक दिशा प्रदान की अथवा कर रहे हैं।

नैतिक—° भ्रष्टाचार, अनाचार एवं राजनैतिक तथा सामाजिक असदाचार के विरुद्ध संघर्षरत नैतिक तथा अहिंसात्मक शक्तियों तथा संगठनों को अपेक्षित सहयोग।

° विश्व मैत्री, सदाचार, राष्ट्रीय चरित्र तथा पंचशील के विचार-प्रसार में प्रयत्नशील तथा शान्ति आन्दोलन जैसी राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय प्रवृत्तियों, संस्थानों एवं संगठनों में यथासाध्य सहयोग।

° अहिंसक समाज संरचना एवं आध्यात्मिक उत्थान के लिए यत्नशील उन सब कार्यों, मिशन एवं संस्थानों में सहयोग, जो समाज में नये नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना एवं आविर्भाव के लिए सेवाशील हैं।

औद्योगिक—० ऐसे एक वृहत् एवं लोक-कल्याणकारी उद्योग की संस्थापना अथवा सहयोग, जिसमें पूंजी और श्रम की समान प्रतिष्ठा के साथ ट्रस्टीशिप की भावना एवं अणुव्रत समाज संरचना की मूलभूत दृष्टि हो।

सांस्कृतिक—० आध्यात्मिक एवं नैतिक स्तर पर ऐसे कलाकारों एवं कला संस्थानों का सम्मान एवं सहयोग, जो अपने भजन, गीत, एवं सांस्कृतिक प्रदर्शनों द्वारा धार्मिक अभिरुचि जागृत करने एवं नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना में प्रयत्नशील हैं।

उपसंहार

जयाचार्य शताब्दी पर जयाचार्य क्रान्ति एवं उस ऐतिहासिक अवसर की उपलब्धि में विशेष रूप से संकलित "तुलसी निधि" की समायोजना के उक्त कुछ मुख्य बिन्दु हैं और वे सब आध्यात्मिक संयोजना के साथ नैतिक एवं सामाजिक परिवेश लिये हुये हैं। मुझे आशा है, आयोजकगण इस पर विचार करेंगे और आने वाली जयाचार्य शताब्दी को ऐसा रूप देंगे, जो राष्ट्र-व्यापी समारोह की ऐतिहासिक कड़ियों के साथ समाज में नये नैतिक मूल्यों के नव-आविर्भाव की दृष्टि से यह सदैव-सदैव के लिए स्मरणीय बन जाय।

यह और भी प्रसन्नता का विषय है कि युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी ने जयाचार्य शताब्दी को "अनुशासन वर्ष" के रूप में मान्यता देकर अपना अगला यह चातुर्मास भी भारत की राजधानी दिल्ली में घोषित किया है जहां कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संचार तथा विचार-प्रसार के लोक-व्यापी साधन उपलब्ध हैं। दिल्ली में बैठकर क्या नहीं किया जा सकता? बहुत कुछ किया जा सकता है। फिर आचार्यश्री का वरदहस्त जहां हमें प्राप्त है, वहां संभावनायें भी समुज्ज्वल हैं। आवश्यकता है हम अभी से संगठित हों और समायोजन की राष्ट्रव्यापी तैयारी में जुट पड़ें। सामयिक योजना के साथ वास्तविक दिशा एवं संकल्प सफलता तक पहुंचने के लिए पर्याप्त हैं। यही हमारे लिए सर्वोत्तम प्रकाश है।

यह सही है कि जयाचार्य शताब्दी पर वार्षिक कार्यक्रमों की दृष्टि से लंबा विचार आवश्यक है। मैं अभी इसे न छू सकने के लिए क्षमा-प्रार्थी हूं। ऐसे भी यह बिन्दु-बिन्दु होते हुए भी काफी बड़ा एवं भारी हो चला है, लेकिन "अनुशासन वर्ष" अपने-आप में बृहत् कार्यक्रम की सूचना है। इस पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से बृहत् सेमिनार के साथ लोकमत संगृहीत किया जा सकता है। विश्व-व्यापी स्तर पर आचार संहिता बनाई जा सकती है। समाज के जागरूक प्रचेता एवं सभी कार्यकर्त्तागण इस पर गहराई से विचार करें, यह मेरा नम्र अनुरोध है।

—०—

सत्येन धार्यते पृथ्वी, सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च, सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

—०—

साहित्य-समीक्षा

महाप्रज्ञ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

सम्पादक—कन्हैयालाल फूलफगर
प्रकाशक – मित्र परिषद्, कलकत्ता
मूल्य—३१·०० रुपये, पृष्ठ ४५२

'महाप्रज्ञ : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' एक महान् ग्रन्थ है। इसके सम्पादकप्रवर श्री कन्हैयालाल फूलफगर ग्रन्थ का शुभारंभ करते हुए महाप्रज्ञ मुनि नथमलजी की जिन मर्मस्पर्शी, भावभीने एवं सश्रद्ध शब्दों में वन्दना करते हैं, वह कितनी सुरुचिपूर्ण है उसका मूल्यांकन तो सहज ही हो जाता है। वे कहते हैं—

मौन हो गये ग्रन्थ जहां पर, तुमने दी फिर वाणी,
गूंजेगी यह दिग् दिगन्त में बन करके कल्याणी।
श्रद्धा और समर्पण कोई सीखे पास तुम्हारे,
कोटि-कोटि वन्दन-अभिनन्दन ओ जग के उजियारे।

यहां फूलफगरजी की भावना शिष्यत्व का श्रेष्ठतम प्रतीक है, वहां **राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर** ने मुनि नथमल के महान् व्यक्तित्व के संबंध में जो उद्गार प्रकट किये हैं, वे निःसंदेह एक समकालीन महामना के ऐसे वाक्य हैं जो स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य हैं। दिनकर जी कहते हैं, **"हम विवेकानन्द के समय में नहीं थे। हमने उनको नहीं देखा, केवल उनके विषय में पढ़ा मात्र है। मुनि नथमलजी हमारे समक्ष हैं। आप आज के विवेकानन्द हैं। आपको पाकर हम गौरवान्वित हैं। आप की तीक्ष्ण और ठेठ तक पहुंचने वाली बुद्धि से हम परिचित हैं।"**

दिनकरजी मुनि नथमलजी के प्रकाण्ड पांडित्य से प्रभावित थे और उनके वाक्य उक्त तथ्य का ज्वलन्त साक्ष्य प्रकाशित कर रहे हैं।

आचार्य तुलसी स्वयं जैन-धर्म के परमाचार्य हैं। वे एक पारदर्शी महामना महामानव हैं। उन्होंने जो कुछ किया, उसकी गणना जैन-धर्म की आधारशिला ही स्थापित करने के रूप में की जायेगी। वे जैन निगमागम के चिन्तक, प्रचारक और प्रवर्तक हैं। वे अपने शिष्यों पर जिस स्नेह को बिखेरते रहते हैं, उससे उनके सुयोग्य शिष्यों का एक ऐसा प्रभूत एवं दुर्भेद्य संसार बन गया है जिसने जैन-धर्म की दीप्तिशिखा को प्रज्वलित किया है और जैन निगमागम की उच्चता और श्रेष्ठता को प्रमाणित कर दिया है। आचार्य तुलसी ने जो कुछ

सोचा विचाराहै, उसे महाप्रज्ञ ने मूर्तरूप ही नहीं दिया अपितु उसे क्रियान्वित भी कर दिया है। जिस श्रद्धा, साधना और तत्परता से महाप्रज्ञजी ने आचार्य तुलसी के निर्देशि तमार्ग का अनुसरण कियाहै, आचार्य प्रवर के चिन्तन को मूर्तरूप दिया तथा उनके आदेशों का परिपालन कियाहै, वह विश्व के धर्म और साहित्यके इतिहास में अप्रतिम है। हमारी यह धारणा है कि आचार्य तुलसी को महाप्रज्ञ के रूप में जो सहायक मिला है उसके माध्यम से तेरापंथ की तो उन्नति हुई ही, जैन-धर्म के मौलिक चिन्तन में भी उन्नयन और उपबृंहण हुआ है। जैन-धर्म में यह तो गुरू की महिमा और शिष्य परंपरा का एक आदर्श निदर्शन के रूप में भी उदित हुआ है। यह तो गुरु की महिमा और शिष्य की भावना का एक प्रबल सामंजस्य ही है।

यदि मानस-कार तुलसी न होते तो राम की महिमा का प्रकाश कैसे होता और यदि सूर की अन्धी आंखों ने कृष्ण का दिव्य स्वरूप न देखा होता तो कृष्ण चरित्र एक रससिन्धु कैसे बनता ! वास्तव में श्री फूलफगर ने हमारे चरितनायक महाप्रज्ञ नथमलजी से हमें मिला दिया है। वे अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से महाप्रज्ञ की विभूतिमयी महिमा को प्रकाश में लाये हैं और उससे उन्होंने एक जिज्ञासु एवं धर्मप्राण संसार में जो प्रकाश की छटा बिखेरी है, उससे भारतीय समाज आलोकित हुआ है।

श्री फूलफगर एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनका हिन्दी, एवं उर्दू पर समान अधिकार है। आज के युग में उर्दूदाँ तो उर्दू को ऐसी शब्दायली में लिखने में अपनी अदबी योग्यता मानते हैं जिसको वे ही लिखें और वे ही समझें। परिणाम यह होता है कि हिन्दी के साहित्यिक बन्धुगण उर्दू शायरी में प्रदर्शित भावों से प्रायः वंचित ही रह जाते हैं। फूलफगरजी ने सरल और सुबोध शेरों से उर्दू के अदब की ऐसी झांकी उपस्थित कर दी है जिससे हिन्दी और उर्दू के बीच की खाई कम होगी और हमारे पाठक हिन्दी कविता के साथ-साथ उर्दू शायरी का भी रस-ग्रहण कर सकेंगे।

'कथा एक जोगी की' शीर्षक से एक लेख इस ग्रन्थ में श्री कन्हैयालाल फूलफगर का है जिसमें महाप्रज्ञ के जीवन से संबंधित अनेक घटनाओं का विशद् उल्लेख है। यह लेख महाप्रज्ञजी के प्रकाण्ड पाण्डित्य का सोदाहरण प्रमाण प्रस्तुत कर रहा है। इस लेख में कतिपय उर्दू के शेरों का फूलफगरजी ने समावेश किया है जो महाप्रज्ञ जी के प्रति उनकी श्रद्धा भावना को ही व्यक्त करते हैं। सतही उर्दू काव्य बहुत ही उच्च कोटि का है। उर्दू कविता के उद्धरण फुलफगरजी की नीर-क्षीर विवेकिनी प्रतिभा के द्योतक हैं। आचार्य तुलसी जब महाप्रज्ञजी को आशीर्वाद देते हैं तो फूलफगरजी लिखते हैं :—

बागवां दिल से चमन को यह दुआ देता है।
मैं रहूं या न रहूं गुलशन तेरा आबाद रहे।

एक और स्थान पर वे लिखते हैं :—

मेरी इस वाई का हाल ये दावे अहशर न पूछें।
मैं भरी महफिल में यह किस्सा सुना नहीं सकता ॥

फूलफगरजी अनिवार्यतः हिन्दी के उच्चकोटि के साहित्यकार हैं, परन्तु उनका उर्दू ज्ञान उन्हें एक विलक्षण समन्वयवादी शक्ति प्रदान कर देता है। वे जब चाहते हैं, अपनी भाषा में उर्दू के शेर आदि को नगीने की तरह फिट कर देते हैं। वास्तव में यह उनके उर्दू भाषा पर हिन्दी भाषा की तरह समान अधिकार का द्योतक है।

रंग-बिरंगे फूलों से सुसज्जित महाप्रज्ञ से संबंधित यह ग्रन्थ रूपी उद्यान फूलफगर जैसे कुशल माली द्वारा सुरभित और सर्वाङ्ग पूर्ण सौन्दर्य से सुशोभित किया गया है।

—वृन्दावनदास, बी.ए., एल.एल.बी.
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

जैन धर्म के प्रभावक आचार्य

लेखिका—साध्वीश्री संघमित्रा जी

प्रकाशक—जैन विश्व भारती, लाडनूं (राज०)

मूल्य—पच्चीस रुपये, पृष्ठ ४३२, प्रथम संस्करण, १९७९

पिछले करीब चालीस साल के अरसे में तेरापंथ का जो प्रगतिलक्षी कायापलट हुआ, वह अपने आपमें एक गौरवप्रद ऐतिहासिक घटना है, जो अन्य धर्म पंथों के लिये मार्गदर्शक कही जा सकती है। इस समय में तेरापंथ के संतों और विशेषकर उस पंथ की महासतियों ने ज्ञानोपासना के क्षेत्र में एवं अन्य अनेक विषयों में जो प्रगति की है और सफलता प्राप्त की है, यह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। ऐसे अह्लादकारी व आदर्श परिवर्तन का सारा यश पूज्य आचार्य तुलसी जी महाराज की दीर्घदृष्टि, उदार मनोवृत्ति व समय को परखने की विलक्षण बुद्धि को जाता है। तेरापंथ की ऐसी प्रगतिशीलता में ज्ञानसाधना एवं ध्यान-साधना में समान भाव से निरत विशिष्ट व मौलिक सतर्क प्रतिभा के स्वामी तथा हर विषय के मूल तक पहुंचने की अनोखी सूझ-बूझ रखने वाले युवाचार्य महाप्रज्ञजी का हिस्सा भी कुछ कम नहीं है।

तेरापंथ के तेजस्वी, अध्ययनशील व प्रभावशाली साध्वी समुदाय में पूज्य महासती संघमित्राजी महाराज का नाम व कार्य प्रथम पंक्ति में आदरणीय स्थान प्राप्त करें, ऐसी कामना है। जैसी वे एक अच्छी प्रवचनकर्त्री हैं वैसी ही वे उत्तम लेखिका भी हैं और उनके प्रवचन व लेखन दोनों में उनकी विद्यासाधना के जो दर्शन होते हैं, उससे उनके प्रति आदर और बढ़ जाता है।

पूज्य महासती संघमित्राजी द्वारा लिखित **जैनधर्म के प्रभावक आचार्य** नामक पुस्तक कुछ समय पूर्व प्रकाशित हुई है। इस ग्रंथरत्न में भगवान् महावीर के युग से लेकर आधु-

निक युग तक के पच्चीस सौ वर्ष जितने सुदीर्घ समय में जैन शासन की प्रभावना करने वाले मुख्य-मुख्य १२० आचार्यों का सुगम व रसप्रद परिचय दिया गया है। इन परिचयों की खास ध्यान खींचने वाली विशेषता यह है कि उसमें जैन संघ के दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्ति-पूजक, स्थानकमार्गी तथा तेरापंथी चारों फिरकों के आचार्यों के परिचय को स्थान दिया गया है। इससे यह ग्रंथ जैसे साध्वी संघमित्राजी की अध्ययन परायणता का परिचायक बना है, वैसे ही यह उनकी उदार व गुणग्राहक दृष्टि के भी सुगम दर्शन कराता है।

जैन परंपरा को अखण्डित रखने वाले आचार्य भगवंतों के परिचयों के अतिरिक्त इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में आगम-युग, उत्कर्ष-युग और नवीन युग की श्रमण परम्परा की गति-विधियों का जो सिंहावलोकन किया गया है, उससे इस ग्रंथ की गुणवत्ता, महत्ता व उपयोगिता और बढ़ गई है, ऐसा कहना चाहिए।

तीनों युगों के अवलोकन के अन्त में और प्रत्येक आचार्य-देव के परिचय के अन्त में आधारभूत ग्रंथों या स्थानों की सूची भी दी गई है, जो ग्रंथगत विषयों के बारे में विशेष जिज्ञासा रखने वालों को अत्यन्त सहायक हो सकती है। इस प्रकार महासती संघमित्राजी ने इस ग्रंथ को सर्वाङ्गपूर्ण व सर्वाङ्गसुन्दर बनाने के लिये जिस लगन व एकाग्रता से परिश्रम किया है, वह बहुत प्रशंसनीय व अनुकरणीय है।

४५२ पृष्ठों जितना बृहत् यह ग्रंथ छपाई-सफाई, कागज, बाइण्डिंग आदि बाह्य रूप-रंग में जितना आकर्षक बना है, उससे अधिक वह ग्रंथ की आत्मा रूप आन्तरिक विद्या-सामग्री से समृद्ध बना है। इसके लिए जैन-संघ उनका बहुत आभारी है और महासती संघमित्राजी धन्यवाद व अभिनन्दन की अधिकारिणी हैं। उनकी यह विद्या-साधना निरन्तर आगे बढ़ती रहे, ऐसी शुभकामना के साथ।

—रतिलाल दीपचन्द देसाई
६, अमल सोसायटी
अहमदाबाद-७

—:०:—

आचार्य भिक्षु ने कहा था—वन में काष्ठ बहुत है, पर प्रतिमा का निर्माण करने वाले शिल्पी बहुत नहीं है। शिल्पियों की कमी हर युग में खटकती रहती है, वह आज भी है। आज की सामाजिक और राष्ट्रीय संरचना की सबसे बड़ी अपेक्षा है—जीवन निर्माण। वर्तमान समाज-संरचना के लिए शारीरिक, बौद्धिक मानसिक व आध्यात्मिक विज्ञान अपेक्षित है।

आचार्य श्री तुलसी

—:०:—

समाचार दर्शन

आचार्य तुलसी जैन विश्व भारती के प्रांगण में

अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का सम्वत् २०३७ का पावस प्रवास कार्यक्रम जैन विश्व भारती के प्रांगण में उल्लासपूर्ण वातावरण में प्रगतिशील है।

आचार्य प्रवर जैन विश्व भारती में निर्मित सुधर्मा सभा (प्रवचन पण्डाल) में इन दिनों जयाचार्य रचित **"आराधना"** का वाचन व विस्तार से विवेचन कर रहे हैं। इससे पूर्व वे कई दिनों तक जयाचार्य रचित **"चौबीसी"** पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाल चुके हैं। श्रद्धालु जन इस वाचन-विवेचन में बड़ा रस ले रहे हैं। आचार्य प्रवर द्वारा विस्तृत रूप से इन विषयों पर जिस रोचकता से प्रकाश डाला जा रहा है, उससे श्रोताओं की ज्ञान वृद्धि हो रही है। इन रचनाओं को समझने से उन्हें नवीन दृष्टि उपलब्ध होगी। स्मरण रहे कि जयाचार्य द्वारा **"चौबीसी"** की संरचना इसी लाडनूं नगर में हुई थी और अब जब जयाचार्य की शताब्दी का समय सन्निकट है, लाडनूं नगर का यह सौभाग्य है कि उसे वर्तमान आचार्य श्री के द्वारा समझने व श्रद्धासहित दैनन्दिन उच्चारण तथा अपनाने की प्रबल प्रेरणा मिल रही है। प्रवचन सभा का सारा वातावरण बड़ा शान्तिपूर्ण रहता है, श्रोता भाव-विभोर हो जाते हैं।

"श्री तोलाराम कोठारी स्मृति ग्रन्थ" का विमोचन

दिनांक ५ अगस्त को प्रातःकालीन प्रवचन के समय चूरू निवासी श्री सोहनलाल जी कोठारी द्वारा प्रस्तुत "दृढ़धर्मी श्रावक श्री तोलाराम जी कोठारी स्मृति ग्रंथ" का विमोचन आचार्य श्री द्वारा हुआ। चूरू के स्व० श्री तोलाराम जी कोठारी तेरापंथी समाज के वरिष्ठतम श्रावकों में थे। आचार्यप्रवर ने ग्रन्थ को स्वीकार करते हुए उनके द्वारा धर्मसंघ के प्रति की गई सेवाओं का उल्लेख किया। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री श्रीचंद जी रामपुरिया, श्री डूंगरमल जी कोठारी, श्री हनुमानमल जी कोठारी व श्री मांगीलाल जी छाजेड़ ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए।

'दीक्षा-समारोह' २४ सितम्बर, १९८० को

आचार्यप्रवर ने दिनांक १६ अगस्त की प्रातःकालीन प्रवचन सभा में लाडनूं के प्रमुख नागरिक श्री हनुमानमल जी बैंगानी व अन्य महानुभावों तथा साधकों के पारिवारिक-जनों की आग्रहपूर्ण विनती पर ध्यान देते हुए दो साधकों श्री दिनेशकुमार (टापरा-निवासी) व श्री देवेन्द्रकुमार (जसोल-निवासी) को आगामी २४ सितम्बर, ८० बुधवार तदनुसार

भाद्रपद पूर्णिमा को दीक्षा देने की स्वीकृति प्रदान की है। दोनों युवक पिछले वर्ष भर से पारमार्थिक शिक्षण संस्था में रह कर धार्मिक अध्ययन में तल्लीनता से लगे हुए हैं।

सम्यक्त्व दीक्षा संस्कार सम्पन्न

गत २७ जुलाई रविवार को गुरु पूर्णिमा के पावन क्षणों में "सम्यक्त्व दीक्षा संस्कार" का एक अपूर्व आयोजन आचार्यप्रवर के सान्निध्य में सुधर्मा सभा के पण्डाल में सम्पन्न हुआ, जिसमें सैकड़ों बालक-बालिकाओं ने आचार्यश्री से सम्यक्त्व दीक्षा ग्रहण की।

श्री भगवती भाई पटेल "समाजभूषण" की उपाधि से अलंकृत

गुरु पूर्णिमा के समारोह में ही श्रावक सम्मेलन की ओर से अहमदाबाद-निवासी श्री भगवती भाई रणछोड़दास पटेल को "समाजभूषण" की उपाधि से अलंकृत किया गया। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व श्री छोगमल जी चौपड़ा (गंगाशहर), श्री जसवन्तमल जी सेठिया (मद्रास) व पद्मश्री प्रभुदयाल जी डाबड़ीवाल (नई दिल्ली) यह सम्मान पा चुके हैं। आचार्य प्रवर ने इस, प्रसंग पर श्री भगवती भाई पटेल की धार्मिक व सामाजिक सेवाओं की प्रशंसा की और अपने सेवकों का सम्मान करने की इस प्रवृत्ति के विषय में कहा—"वह समाज समाज नहीं, जो अपने बुजुर्गों और बहुमूल्य व्यक्तियों को न समझे और न उनका अंकन करे। श्री भगवती भाई सर्वात्मना समर्पित व्यक्ति हैं।"

जैन विश्व भारती के परामर्शक

इसी सभा में आचार्यप्रवर ने निम्न तीन महानुभावों की सेवाओं का स्मरण करते हुए उन्हें "जैन विश्व भारती परामर्शक" की उपाधि से अलंकृत किया :—

१. श्री श्रीचंद जी रामपुरिया, सुजानगढ़।

२. श्री जब्बरमल जी भंडारी, जोधपुर।

३. श्री जेठाभाई एस. जवेरी, बम्बई।

संत-सतियांजी का स्वर्गवास

दिनांक १४ जुलाई सोमवार को मध्याह्न में लाडनूं सेवाकेन्द्र में इस वर्ष "बड़े हाकिम" के रूप में मनोनीत साध्वी श्री भत्तूजी (सरदारशहर) का ब्रेन हेमरेज के कारण लगभग १४ घण्टे की बेहोशी के उपरान्त देवलोक हो गया।

दिनांक २८ जुलाई सोमवार को सेवाकेन्द्र में विराजित साध्वीश्री पिस्तांजी (जमालपुर) का समाधिमरणपूर्वक देवलोक हो गया। इस दिन इनके चौविहार का चौबीसवां दिन था, जो एक नया कीर्तिमान स्थापित हो चुका है। क्योंकि इससे पूर्व बाईस दिन तक का ही चौविहार करके देह त्याग का कीर्तिमान था। संलेखना तपस्या के ३७वें दिन उनका देवलोक हुआ।

४ अगस्त सोमवार को प्रातःकाल मुनिश्री चम्पालाल जी (लाडनूं) का हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे ६३ वर्ष के थे तथा ४१ वर्ष पूर्व अपनी

पत्नी के साथ इसी नगर में उनकी दीक्षा भी हुई थी। ३२ वर्ष तक आचार्यप्रवर के निजी सेवक "कोतवाल" के रूप में उन्होंने धर्मसंघ की गहरी सेवा की थी।

इन सभी संत-सतियांजी के स्वर्गवास पर आचार्यप्रवर के सान्निध्य में "सुधर्मा सभा" में स्मृति सभाओं के आयोजन किये गये, जिनमें विभिन्न संत-सतियांजी व श्रावकों ने इनके साधनामय जीवन पर प्रकाश डाला।

"उपासिका-दीक्षा" के रूप में साधना का प्रारंभ

रतनगढ़ व नेपाल के सुप्रसिद्ध उद्योगपति सेठ रामलाल जी गोलच्छा के परिवार की फारबिसगंज निवासिनी श्रीमती सीरूबाई को "उपासिका दीक्षा" के रूप में चातुर्मास-काल के लिए वैराग्यमय जीवनसाधना का संकल्प दिलाया गया।

युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रवचनों का प्रारंभ

दिनांक १० अगस्त ८० से सुधर्मा सभा के पण्डाल में प्रति रविवार को रात्रि के समय युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा "जीवन विज्ञान" विषयक प्रवचनमाला का प्रारंभ आचार्यप्रवर के सान्निध्य में किया गया है। इसमें नगर के जैन, अजैन, विविध सम्प्रदायों के विद्वान् एवं बुद्धिजीवी लोग अच्छी रुचि ले रहे हैं। अभी तक १० एवं १७ अगस्त को कुल दो प्रवचन हुए हैं। प्रवचन के पश्चात् उक्त विषय पर शंकाएं आमंत्रित करके युवाचार्यश्री द्वारा उनका समाधान प्रस्तुत किया जाता है। आचार्यप्रवर के आशीर्वाद के पश्चात् कार्यक्रम संपन्न होता है। उक्त दो प्रवचनों के संयोजक मुनि श्री किशनलाल जी थे।

छात्रावास योजना का प्रारंभ

जैन विश्व भारती में छात्रों को संस्कारवान् तथा सुनागरिक बनाने की दृष्टि से एक छात्रावास योजना का प्रारंभ किया गया है। श्री सदासुख जी कोठारी इस योजना के प्रमुख निदेशक व श्री राणमलजी जीरावला सहनिदेशक हैं। सुसंस्कारी व आचारवान् मानव-निर्माण की दिशा में जैन विश्व भारती का यह एक महत्त्वपूर्ण कदम है। श्री खेमचंद जी चोरड़िया (लाडनूं) ने इस योजना के लिए एक वर्ष तक प्रतिमाह डेढ़ हजार रुपये का अनुदान तथा श्री शेरसिंह जी बोथरा (चूरू) ने दो वर्ष तक एक हजार रुपये मासिक अनुदान देने की घोषणा की है।

"आगम कोश" कार्य का सम्पादन

जैन विश्व भारती परिसर में पुस्तकालय के पास-पड़ौस के खुले वातावरण में अलग-अलग समूहों में बंटकर, छायादार वृक्षों के नीचे, जगह-जगह "आगम-कोश" के महत्त्वपूर्ण कार्य संपादन में अनेक विदुषी साध्वियां तथा एम. ए. के समकक्ष साधिका, शिक्षार्थी बहिनें जिस तन्मयता से इस कार्य में जुटी हैं, वह दृश्य पुराने युग के शिक्षण-केन्द्रों की याद दिलाता है। आचार्यप्रवर तथा युवाचार्यश्री स्वयं अनेक बार इस कार्य का निकट से निरीक्षण कर चुके हैं। आचार्य श्री ने कहा है—"श्रुत सन्निधि में चल रहे जैन

आगम कोश के बृहद् व महत्त्वपूर्ण कार्य में साध्वीवृन्द तथा शिक्षित बहिनें जिस उत्साह व लगन से संलग्न हैं, वह प्रशंसनीय है। शिक्षण का यह नवीन प्रयोग है। शिक्षार्थी बहिनें अपने भावी अध्ययन की इस दिशा में निरन्तर अग्रसर हैं। बृहद्कल्प, निशीथ व आवश्यक सूत्र आदि आगमों का सांगोपांग अध्ययन कर आगमकोश निर्माण जैसा कार्य किया जा रहा है। शिक्षण का यह क्रम अत्यन्त दुर्लभ है। वैदिक, बौद्धिक व जैन साहित्य में अब तक बहिनों का योग नहीं के बराबर रहा है, अतः इस दिशा में हो रहा यह काम एक नया इतिहास बनेगा।"

जैन विश्व भारती का दशम वार्षिक अधिवेशन

दिनांक २७ व २८ जुलाई, १९८० को श्री जैन विश्व भारती का दशम वार्षिक अधिवेशन श्रीमान् श्रीचंद जी रामपुरिया की अध्यक्षता में संस्था के सचिवालय भवन में संपन्न हुआ। निवर्तमान संस्थामंत्री श्री श्रीचंद जी बैंगानी ने वार्षिक-प्रतिवेदन तथा परीक्षित हिसाब प्रस्तुत किया। साधारण सभा ने उनका तथा इस सत्र के समस्त पदाधिकारियों, सदस्यों व कर्मचारियों का आभार स्वीकार किया, जिनके प्रयत्न से संस्था ने इतनी प्रगति की है। शिक्षा, शोध, साधना व सेवा की सभी प्रवृत्तियों के सुचारु संचालन के अलावा संस्था में सचिवालय भवन का व कुछ सड़कों का निर्माण भी इसी अवधि में संपन्न हुआ है।

नये पदाधिकारियों व संचालिका समिति का गठन

इसी साधारण सभा में सत्र १९८०-८१ के लिए श्रीमान् श्रीचंद जी रामपुरिया की अध्यक्षता में नये पदाधिकारियों व संचालिका समिति के सदस्यों का निर्वाचन किया गया, जो इस प्रकार है—

श्री श्रीचंद जी रामपुरिया	अध्यक्ष
श्री मन्नालाल जी सुराणा	उपाध्यक्ष
श्री जेठाभाई एस. जवेरी	उपाध्यक्ष
श्री बिहारीलाल जी जैन	उपाध्यक्ष
श्री राणमल जी जीरावला	उपाध्यक्ष
श्री श्रीचंद जी बैंगानी	उपाध्यक्ष
श्री श्रीचंद जी सुराणा	मंत्री
श्री जे० के० जौहरी जी	उपमंत्री
श्री भंवरलाल जी बेगवानी "एडवोकेट"	उपमंत्री
श्री हनुमानमल जी बैंगानी	कोषाध्यक्ष

इन दस पदाधिकारियों के अलावा निम्नलिखित २६ महानुभावों को संचालिका समिति के सदस्य के रूप में लिया गया है—

श्री खेमचंद जी सेठिया	गंगाशहर-कलकत्ता
,, सूरजमल जी गोठी	सरदारशहर-बंबई
,, जब्बरमल जी भंडारी, एडवोकेट	जोधपुर
,, माणिकचंद जी सेठिया	सुजानगढ़
,, संपतराय जी भूतोड़िया	लाडनूं-वर्द्धमान
,, पूनमचंद जी चोरड़िया	बीदासर-कलकत्ता
,, जब्बरमल जी दूगड़	सरदारशहर
,, मांगीलाल जी विनायकिया	अहमदाबाद
,, नरसिंहदास जी डागा	सरदारशहर-कलकत्ता
,, सागरमल जी खटेड़	लाडनूं
,, जाहूमल जी घोड़ावत	लाडनूं-नौगांव
,, शिवचंदराम जी डाबड़ीवाल	कलकत्ता
,, रतनलाल जी रामपुरिया	बीकानेर-कलकत्ता
,, विजयसिंह जी कोठारी	लाडनूं
,, शुभकरण जी सुराणा	अहमदाबाद
,, हीरालाल जी छाजेड़	श्रीडूंगरगढ़
,, रिद्धकरण जी डागा	सरदारशहर
,, जेसराज जी सेखानी	बीदासर-सूरत
,, झूमरमल जी बैंगानी	बीदासर-बंबई
,, उत्तमचंद जी सेठिया	मोमासर-जयपुर
श्रीमती हुलासीदेवी भूतोड़िया	लाडनूं
श्रीमती फूलकुमारी सेठिया	सुजानगढ़
श्री रिद्धकरण जी बोथरा	लाडनूं-कलकत्ता
,, तोलाराम जी पुगलिया	करीमगंज (आसाम)
,, गंगाराम जी लालानी	गंगाशहर
,, झूमरमल जी दूगड़	सरदारशहर-कलकत्ता

(सम्प्रति पांच स्थान रिक्त हैं)।

जैन विश्व भारती का विभागीय विभाजन

जैन विश्व भारती की नवनिर्वाचित संचालिका समिति ने अपनी ११ अगस्त की प्रथम बैठक में अपनी शिक्षा, शोध, सेवा व साधना की प्रवृत्तियों के सुचारु रूप से संचालन के लिए निम्न प्रकार विभागों का गठन किया है तथा निम्नानुसार महानुभावों को चेयरमैन व निदेशक के रूप में इनके सुसंचालन का दायित्व सौंपा है—

नाम विभाग	मनोनीत अधिकारी
१. शिक्षा विभाग	श्री राणमल जी जीरावला, चेयरमैन
(क) ब्राह्मी विद्यापीठ	श्री भैरुलाल जी बरड़िया निदेशक
(ख) छात्रावास	श्री सदासुखजी कोठारी, निदेशक
२. शोध विभाग	श्री श्रीचंद जी बैंगानी, चेयरमैन

(क) अनेकान्त शोधपीठ (ख) वर्द्धमान ग्रन्थागार (ग) शोध छात्रवृत्ति	डा० नथमल जी टाटिया, निदेशक
३. साहित्य और संस्कृति	श्री श्रीचंद जी रामपुरिया, चेयरमैन
(क) जैन विद्या परीक्षा (ख) पत्राचार पाठ्यक्रम	श्री गोपीचंदजी चोपड़ा, निदेशक
४. साधना विभाग	जेठाभाई एस. जवेरी, चेयरमैन
५. सेवा विभाग	श्री जब्बरमल जी भंडारी, चेयरमैन
६. वित्त और विकास विभाग	श्री श्रीचंद जी रामपुरिया, चेयरमैन
७. निर्माण विभाग	श्री श्रीचंद जी सुराणा, चेयरमैन श्री जे० के० जौहरी जी, निदेशक

संविधान संशोधन उपसमिति

इस उपसमिति का गठन इस प्रकार किया गया—

श्री जेठाभाई एस० जवेरी, चेयरमैन

श्री मोहनलाल जी कठोतिया

श्री जब्बरमल जी भंडारी

श्री मोती लाल जी कोठारी

श्री भंवरलाल जी बेगवानी, वकील

अध्यक्ष व मंत्री दोनों पदेन सदस्य होंगे।

जैन विश्व भारती के बढ़ते चरण

सेवाभावी कल्याण केन्द्र के अन्तर्गत आयुर्वेदिक चिकित्सालय का काम दिनोंदिन प्रगति पर है। रोगियों की चिकित्सा का कार्य सुव्यवस्थित रूप से चल रहा है। गत जून व जुलाई में चिकित्सा-लाभ लेने वाले रोगियों की संख्या इस प्रकार रही—

माह	नवीन	पुराने	पुरुष	स्त्री	बालक	=	योग
जून	१५५८	६१७५	२९३२	३३९१	१४१०	=	७७३३
जुलाई	१७५४	५७४२	२८४०	३२१७	१४३९	=	७४९६

इस प्रकार दैनिक रोगियों की औसत संख्या २५४ रही।

रसायनशाला - वर्षा ऋतु के कारण औषध निर्माण का कार्य तेज गति से तो नहीं हो सका, फिर भी इन दो महीनों में ९२ औषधियों का निर्माण किया गया जिनमें श्रेयसी-वटी, लवंगादिवटी, अश्वगंधागुग्गुलु, शक्तिदा, शिलाजीत, ताप्यादि लौह, शिवागुग्गुलु, मृत्युंजयरस, महाशंखवटी, पुष्पधन्वारस, द्राक्षावलेह, अर्जुनारिष्ट, सिद्धकल्प, चोपचीन्यादि चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, सुदर्शन चूर्ण, अष्टामृत रसायन, त्रिबंग भस्म, कुमार्यासव, बालसखा आदि अनेक औषधियों के नाम उल्लेखनीय हैं।

शोध विभागान्तर्गत जैन विद्या परिषद् का अष्टम अधिवेशन

जैन विश्व भारती के शोध विभाग द्वारा १८, १९ व २० अक्टूबर को **"आगम मन्थन"** विषय पर जैन विद्या परिषद् का अष्टम अधिवेशन युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में जैन विश्व भारती के प्रांगण में आयोजित किया जा रहा है। इसमें देश-विदेश के अनेक मूर्धन्य विद्वानों को आमंत्रित किया गया है। यहाँ यह ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व अब तक जैन विद्या परिषद् के सात अधिवेशनों का आयोजन किया जा चुका है, जिनसे विद्वत्समाज काफी प्रभावित हुआ है।

शोध मण्डलियों द्वारा कार्य संपादन

शोध मण्डली-१ (निशीथ सूत्र)

साध्वीश्री कनकश्री जी के संयोजकत्व में इस मण्डली के अध्ययन का आधार है -- **निशीथसूत्र** तथा उनका व्याख्या साहित्य -**निर्युक्ति, भाष्य** और **चूर्णि**।

सूत्रकार--चतुर्दशपूर्वी आचार्य भद्रबाहु (प्रथम)।

निर्युक्तिकार--भद्रबाहु (द्वितीय)।

भाष्यकार--संघदास गणी।

चूर्णिकार—आचार्य जिनदास महत्तर।

उपाध्यायश्री अमरमुनि द्वारा संपादित **निशीथसूत्र** उपलब्ध होने पर भी मुद्रण की अशुद्धियों के कारण यत्र तत्र अवरोध उपलब्ध होते हैं। जैसे भाष्य गाथा १९५८ के प्रथम पद में **"दत्थी हामि व णीए"** अशुद्ध पाठ मुद्रित हुआ था। युवाचार्य श्री ने तत्काल शुद्ध पाठ बता दिया —**"दच्छिहामि व णीए"**— **'द्रक्ष्यामि वा निजकान्'**। इस अशुद्धि का एक कारण यह था कि "दत्थि" और "हामि" एक ही क्रियापद के दो टुकड़े हो गये और दूसरा कारण था कि प्राचीन हस्तलिपि के अनुसार **"छ"** और **"थ"** का लिपि-सादृश्य होने के कारण **"छ"** का **"थ"** पढ़ा जाने लगा।

इसी प्रकार भाष्य गाथा १८०० की चूर्णि का पाठ है—**"भत्तसजोयणा, उवधि संजोयणा य, एते दो णिसिरणाधिकरणं। तिविधं इमं—सहसा णिसिरणं, पमातेण णिसिरणं अणाभोगेण वा"**। मुद्रण-गत त्रुटि पर ध्यान देने से शुद्ध पाठ इस प्रकार समझ में आया—

"भत्तसंजोयणा, उवधिसंजोयणा य एते दो। णिसिरणाधिकरणं तिविधं इमं—सहसा णिसिरणं, पमातेण णिसिरणं अणाभोगेण वा... ।"

इसी भांति भाष्य गाथा १४४२ में **"जध आतरोसे दीसइ"** के अन्तर्गत **"आतरोसे"** का अर्थ समझ में नहीं आया। फिर **"आतरो" "से"** को अलग-अलग करने से पूरे चरण का रूपान्तरण समझ में आया " **यथा आदरस्तस्य दृश्यते**"। मूलतः चूर्णि की प्राकृत भाषा और शौरसेनी पैशाची भाषा से प्रभावित होने के कारण उद्वृत्त स्वर के स्थान पर "त" का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ था, इसीलिए यह भ्रांति हो गई।

कहीं-कहीं भाष्य गाथाओं और उनकी चूर्णियों की नियोजना में भी गड़बड़ी हुई है, जैसे—भाष्य गाथा १७३२ की चूर्णि गा० १७३० की चूर्णि के साथ जुड़ गई है, जिससे प्रसंगान्तर हो गया है।

पाठ्य ग्रन्थ के प्रथम भाग (पीठिका) का अध्ययन पूरा हो चुका है। द्वितीय भाग के ३०० पृष्ठ पढ़े जा चुके हैं। कुल मिलाकर लगभग १९०० भाष्य गाथाओं का अध्ययन हुआ है। आगम शब्द-कोश, निरुक्तकोश, एकार्थ शब्दकोश और देशी शब्दकोश के लगभग ६००० कार्ड बन चुके हैं। ४००० भाष्य गाथाओं की पद्यानुक्रमणिका तैयार हुई है। निर्युक्ति गाथाओं और द्वार गाथाओं का पृथक् वर्गीकरण किया जा रहा है।

शोधमण्डली—२ (व्यवहार सूत्र)

साध्वी श्री यशोधराजी के संयोजकत्व में इस शोधनमण्डली द्वारा अब तक **व्यवहार** पीठिका और प्रथम उद्देशक का पारायण किया जा चुका है, तथा द्वितीय उद्देशक का पारायण समाप्तप्राय है। लगभग १३५० गाथाएं पढ़ी जा चुकी हैं। प्रकाशन की त्रुटियों के कारण कई स्थल दुरूह लगे, परन्तु युवाचार्यश्री के निर्देशन से सारी शंकाएं दूर हो गई—

सव्वेसु खतियादिसु झाएज्जा पंच मंगलं।
एगगो **वाचि** (वावि) तक्खणं दो सिलोगेव चिंतेज्जा ॥ व्य०पी० १२०.
संकप्पा ईति यं (संकप्पाई तितयं) ॥ व्य० पी० भा० गाथा ५३.
सव्वपत्तेण **वीजयंताणं** (वी जयंताणं) ॥ वही, द्वि० भाग, २२७, पृष्ठ १५.
आलोयण अवराहा अपसत्थ पसत्थगो वणतो (पसत्थगोवणतो उपणतो उपनय) ॥ वही, तृ० भाग, ६६४, पृ० ६४.

इसी प्रकार अन्य अनेक स्थलों पर भी प्रकाशन त्रुटियां सामने आईं। गाथाओं के संख्याक्रम में भी बड़ा गोलमाल है। युवाचार्यश्री के पथदर्शन से मार्ग प्रशस्त बन रहा है।

शोधमण्डली—३ (आयारदसा सूत्र)

साध्वी अशोकश्री जी के संयोजकत्व में **आयारदसा सूत्र** के अध्ययन के प्रसंग में आगम शब्दकोश और निरुक्त शब्दकोश आदि के कार्ड तैयार हो रहे हैं। यदा-कदा उलझन पैदा हो जाती है, क्योंकि चूर्णिकार कहीं-कहीं शब्द मीमांसा में न उतर कर संकेत मात्र से ही शब्द का रहस्य व्यक्त कर देते हैं। युवाचार्यश्री द्वारा मार्ग-दर्शन तथा सामयिक परीक्षाओं द्वारा शोध मण्डली का ज्ञान-संवर्धन हो रहा है।

श्री पंचाशक शास्त्र का भी अध्ययन प्रारंभ किया गया है। इसके रचयिता हरिभद्रसूरि तथा टीकाकार अभयदेव सूरि हैं। इस ग्रन्थ में ५० प्रकरण हैं तथा कुल पृष्ठ ४७८ हैं। अब तक करीब १२५ पृष्ठों का पारायण हो चुका है।

शोध मण्डली—४ (दशवैकालिक)

साध्वीश्री कल्पलताजी के संयोजकत्व में स्थविर अगस्त्यसिंह तथा आचार्य जिनदास महत्तर कृत दोनों चूर्णियों के चार अध्ययनों का पारायण हो चुका है, जिसमें १४४

निर्युक्ति गाथाएं हैं। विशेष अध्ययन के लिए २९ बिन्दु निर्धारित किये गये हैं। **दशवैकालिक** चूर्णियों के आज तक हुए अध्ययन के लगभग २५०० कार्ड बन चुके हैं।

शोधमण्डली—५ (आवश्यक सूत्र))

साध्वीश्री सिद्धप्रज्ञाजी के संयोजकत्व में **आवश्यक सूत्र** के उत्तरभाग की निर्युक्ति तथा चूर्णि पर काम चल रहा है, जिसमें "चउविस्थव", "वंदना" और "कायोत्सर्ग"—इन तीनों आवश्यकों का काम हो चुका है। "प्रत्याख्यान" का कार्य अभी चालू है। अब तक लगभग ५०० निर्युक्तिगाथा तथा चूर्णि का कार्य संपन्न हो चुका है।

शोधमण्डली ६ (बृहत्कल्प सूत्र)

साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी के संयोजकत्व में छेद सूत्रों का पारायण प्रारंभ किया गया था। तृतीय छेद सूत्र **बृहत्कल्प** के छः भाग हैं। प्रथम भाग (पीठिका) को आद्योपान्त पढ़ लिया गया है तथा अब तृतीय भाग संपन्न होने को है। लगभग १८०० भाष्य गाथाएं पढ़ी जा चुकी हैं, जिनमें से निर्युक्ति गाथाएं, संग्रह गाथाएं व द्वार गाथाएं पृथक् छांट ली गई हैं। आगमकोश, देशी शब्दकोश और निरुक्त कोश के लगभग ५००० कार्ड बन चुके हैं। निर्धारित २२ बिन्दुओं की दृष्टि से तथ्यों का चयन किया जा रहा है।

शोधमण्डली—७ (आवश्यक निर्युक्ति, विशेषावश्यक भाष्य)

साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी के संयोजकत्व में **आवश्यक निर्युक्ति** गाथा के १३५० कार्ड तथा **विशेषावश्यक भाष्य** गाथा के ४००० कार्ड बन चुके हैं। अब तक **आवश्यक निर्युक्ति** की ६०० गाथाओं, आवश्यक चूर्णि के ३५० पृष्ठों और **विशेषावश्यक भाष्य** की ६०० गाथाओं का पारायण हो चुका है। आगम कोश के २००० कार्ड, एकार्थक कोश के २०० कार्ड, देशी कोश के २०० कार्ड तथा निरुक्त कोश के १०० कार्ड बन चुके हैं। अन्य वांछित सामग्री भी संकलित की जा रही है।

वित्तीय दृष्टि

वित्तीय दृष्टि से संस्था के संचालन में उसका वित्तीय आधार सुदृढ़ होना भी नितांत आवश्यक है। इस सत्र (अप्रैल से जुलाई तक) में दानदाताओं द्वारा जहां लगभग पचास हजार रुपये का सामान्य अनुदान संस्था को मिला है वहां इतनी ही राशि संस्था को भवन निर्माण फण्ड में भी प्राप्त हुई है। अमर विसर्जन योजना के अन्तर्गत अब तक जमा राशि अठारह लाख रुपयों में लगभग डेढ़ लाख रुपयों की नई वृद्धि हुई है। सामान्य विसर्जन योजना में लगभग तीस हजार रुपये मिले हैं। लगभग पांच हजार रुपयों के साहित्य की बिक्री हुई। गंगा शहर के घोषित अनुदान में से बयालीस हजार रुपयों से अधिक की राशि इस सत्र में आ चुकी है। बावन हजार रुपये श्री जयाचार्य निर्वाण शताब्दी समारोह समिति के लिए मिले हैं।

निर्माण कार्य

संस्था के अतिथि भवन की ऊपर की मंजिल का आने वालों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए निर्माण कार्य तीव्र गति से कराया जा रहा है और शीघ्र ही निर्माण

कार्य पूर्ण हो जाने की आशा है। यह निर्माण अतिथि भवन के निर्माता श्री मन्नालाल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट जयपुर के आर्थिक अनुदान से ही किया जा रहा हैं। स्वास्थ्य भवन की पूर्व दिशा में सुधर्मा सभा की ओर झांकते हुए एक सुन्दर बरामदे व स्वतंत्र मार्ग हेतु पेढ़ियों का निर्माण कार्य भी सम्पन्न हुआ है। इसका निर्माण श्री उत्तमचंद जी सुराणा कोयम्बतूर की धर्मपत्नी के आर्थिक सहयोग से हुआ।

शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती द्वारा जैन तत्त्व विद्या के ज्ञान-प्रदान हेतु जो तात्त्विक परीक्षा क्रम सन् १९७७ से चालू किया गया है, उससे उत्तरोत्तर छात्र-छात्राएं लाभान्वित हो रहे हैं। गत वर्षों में लाभान्वित छात्र-छात्राओं की संख्या इस प्रकार है—

सन् १९७७-७८——२५४३
सन् १९७८-७९——५४७७
सन् १९७९-८०——७०९२

चालू सत्र में करीब ८० परीक्षा केन्द्र स्थापित हो चुके हैं। नए केन्द्रों के लिए आवेदन पत्र प्राप्त करने की अन्तिम तिथि ३१ अगस्त, ८० थी और भरे हुए आवेदन पत्र लेने की अंतिम तिथि १० अक्तूबर, ८० है।

परीक्षाएं दीपावली के तत्काल बाद होंगी, जिनकी तिथि यथासमय घोषित की जाएगी। इस विभाग की शिक्षा सम्बन्धी दूसरी योजना "पत्राचार पाठमाला" द्वारा उच्च शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों को घर बैठे धर्म-दर्शन का परिचय कराना है। इस योजना का यह दूसरा वर्ष है। गत वर्ष प्रथम वर्ष में १४८ विद्यार्थियों ने भाग लिया था। इस वर्ष अभी तक १२१ विद्यार्थियों के आवेदन-पत्र प्राप्त हुए हैं। प्रथम वर्ष में उत्तीर्ण विद्यार्थियों में से अभी तक २५ विद्यार्थियों ने द्वितीय वर्ष में प्रवेश लिया है।

ब्राह्मी विद्यापीठ—

ब्राह्मी विद्यापीठ की वार्षिक परीक्षाओं के पश्चात् १५ जून, ८० से नवीन सत्र का प्रारम्भ हुआ है। परीक्षाफल ९४ प्रतिशत रहा। ग्यारह छात्राएं (सात संस्था साधिकाएं, चार साध्वियांजी) जैन विद्या स्नातक तृतीय वर्ष (अन्तिम वर्ष) की परीक्षा उत्तीर्ण कर जैन विद्या स्नातक की उपाधि से अलंकृत हुई हैं। इनमें से सभी छात्राएं अब शोध-पद्धति से स्नातकोत्तर का अध्ययन (जैन विश्व भारती में) कर रही हैं।

छात्रा संख्या—ब्राह्मी विद्यापीठ (संस्था विभाग) में अध्ययनरत छात्राएं ६५ हैं। सात छात्राओं का नवीन प्रवेश हुआ है तथा ज्ञानशाला विभाग में टी० डी० सी० द्वितीय वर्ष की छह तथा तृतीय वर्ष की छह एवं स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष की एक छात्रा राजस्थान विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में सम्मिलित हुई हैं, जिनका परीक्षाफल अभी नहीं आया है।

नियुक्ति—प्रो० जयन्तीप्रसाद जी जैन, एम० ए०, शास्त्री (भू० पू० अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कुन्दकुन्द जैन डिग्री कॉलेज, खतौली) की नियुक्ति प्राचार्य पद पर हुई है। उन

सहित पांच व्याख्याता अध्यापन कार्य कराते हैं तथा श्रद्धेय साध्वियांजी महाराज एवं स्नातकोत्तर कक्षा की बहिनें भी अध्यापन कार्य में सहयोग करती हैं।

शिक्षा विभाग, ब्राह्मी विद्यापीठ के अध्यक्ष श्री राणमल जी जीरावला (उपाध्यक्ष, जैन विश्व भारती) तथा निदेशक श्री भैरूंलालजी बरड़िया नियुक्त हुए हैं। ग्रीष्मावकाश के क्रम में दिनांक १-९-८० से ३०-९-८० तक का अवकाश होने के कारण उक्त अवधि में विद्यापीठ का अध्यापन कार्य बन्द रहेगा।

विद्यापीठ का कार्य संचालन सुचारु रूप से विधिवत् चल रहा है। योग्य और कुशल व्याख्याता विधिवत् अध्यापन कार्य करते हैं और मेधावी एवं परिश्रमी छात्राएं निष्ठापूर्वक अध्ययन करती हैं।

परिसर विकास—

इस वर्ष अच्छी वर्षा के होने तथा संस्था को जोधपुर निवासी श्री जे०के० जौहरीजी की प्रशासक के रूप में मानद सेवाएं मिल जाने से परिसर का स्वरूप निखर गया है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई दे रही है। इस वर्ष लगभग पांच सौ नये वृक्षों का परिसर में रोपण कराया जा चुका है।

साधना विभाग

जैन विश्व भारती का "तुलसी अध्यात्म नीडम्" साधना की प्रवृत्तियों का केन्द्र-स्थल है। नीडम् ने मानसिक एकाग्रता के लिए प्रेक्षा ध्यान पद्धति को जनता के सामने प्रस्तुत किया है, जिसके प्रयोग एवं अभ्यास से हजारों-हजारों व्यक्ति लाभान्वित हुए हैं। तुलसी अध्यात्म नीडम् में दस दिनों के प्रेक्षा ध्यान शिविरों का आयोजन समय-समय पर होता रहता है। इसमें प्रेक्षा और अनुप्रेक्षा का अभ्यास कराया जाता है। आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग और भावना प्रयोग के द्वारा अभ्यास करने वाले व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य उपलब्ध होता है तथा मानसिक एकाग्रता बढ़ती है।

नीडम् द्वारा आयोजित सत्रहवां प्रेक्षाध्यान शिविर दिनांक ४ सित० १९८० से आयोजित किया गया था। डेढ़ सौ से अधिक शिविरार्थियों ने सोल्लास भाग लिया, जिनके भोजन, आवास एवं साधना की समुचित व्यवस्था नीडम् द्वारा की गई।

नीडम् द्वारा मान्यता प्राप्त प्रशिक्षित साधक देश के विभिन्न भागों में प्रेक्षा ध्यान अभ्यास शिविरों का आयोजन करते हैं, जिनमें भाग लेकर व्यक्ति साधना की वैज्ञानिक पद्धति— "प्रेक्षा ध्यान" – से लाभान्वित हुए हैं।

प्रेक्षा ध्यान शिविरों ने जनता में एक प्यास जगाई है। लोग अध्यात्म रस का पान करना चाहते हैं। नीडम् ने जनता की प्यास का अनुभव कर ध्वनि-मुद्रित प्रवचनों की व्यवस्था की है और वे जनता को सुलभ कराये जा रहे हैं। युवाचार्यश्री द्वारा प्रदत्त शिविर प्रवचन, आचार्य प्रवर के आशीर्वचन एवं अन्य सामग्रियां कैसेट्स में उपलब्ध हैं।

नीडम् में साधकों के लिए साधना की व्यवस्था उपलब्ध है। कोई भी साधक नीडम् में रहकर साधना के क्षेत्र में अपनी प्रगति कर सकता है।

"**प्रेक्षा ध्यान**" तुलसी अध्यात्म नीडम् का मासिक पत्र है। अध्यात्म में रुचि रखने वाले लोगों के लिए उसमें पठनीय सामग्री होती है। साथ ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले बुद्धिजीवियों के लिए भी उससे जीवन निर्माण का सही दिशा-निर्देश प्राप्त होता है। पत्रिका के अब तक लगभग एक हजार ग्राहक बन चुके हैं।

नीडम् के तत्त्वावधान में अध्यापकों एवं प्राध्यापकों के प्रशिक्षणार्थ अध्यात्म योग और नैतिक शिक्षा के शिविर भी आयोजित किये जाते हैं। प्रशिक्षित अध्यापकों के माध्यम से विद्यालयों में अध्यात्म योग और छात्रों में नैतिक चरित्र का पुनः प्रवेश हो, यही इसका लक्ष्य है। अध्यापकों के प्रशिक्षणार्थ ऐसे अब तक तीन शिविर लग चुके हैं। नीडम् संबंधित अध्यापकों के विद्यालयों से सम्पर्क–सूत्र बनाये रखता है तथा अध्यापकों एवं छात्रों को उत्साहित करने के लिए विभिन्न अवसरों पर पुरस्कार वितरण आदि की व्यवस्था करता है।

जीवन विज्ञान ग्रन्थमाला के अन्तर्गत ५० पुस्तकों का सेट नीडम् द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। साथ ही अध्यात्म-साधना-योग विषयक अन्यान्य पुस्तकों के प्रकाशन की व्यवस्था नीडम् ने अपने हाथ में ली है।

प्रेक्षा ध्यान शिविरों का आयोजन

जैन विश्व भारती के साधना विभाग तुलसी अध्यात्म नीडम् के तत्त्वावधान में आयोजित प्रेक्षा ध्यान शिविरों ने थोड़े समय में ही देशव्यापी साधना-शील व्यक्तियों का ध्यान आकर्षित किया है। अब तक संपन्न १६ ध्यान शिविरों में हजार से अधिक साधक-साधिकाएं इस प्रवृत्ति का लाभ ले चुके हैं। अभी अभी सत्रहवां प्रेक्षा ध्यान शिविर युग-प्रधान आचार्यप्रवर के सान्निध्य में तथा युवाचार्य श्री महाप्रज्ञजी के निर्देशन में दिनांक ४ सितम्बर ८० से १३ सितम्बर ८० तक प्रज्ञा प्रदीप भवन में समायोजित किया जा चुका है। आचार्यश्री तुलसी द्वारा रचित "मनोनुशासनम्" पर प्रतिदिन युवाचार्यश्री के विशेष प्रवचन हुए। इसके बाद १८ वां प्रेक्षा ध्यान शिविर मध्य अक्टूबर में १७ अक्टूबर से पूर्व होने की संभावना है।

नागौर जिले के विद्यालयों में योगासन प्रदर्शन

नागौर जिले के डीडवाना, मेड़ता रोड़, गोगोलाव, रिड़, बड़ू व परबतसर के नौ विद्यालयों में पन्द्रह अगस्त को स्वतंत्रता-दिवस के दिन अन्य कार्यक्रमों के साथ योगासन प्रदर्शन का कार्यक्रम भी रहा, जिसमें जैन विश्व भारती तुलसी अध्यात्म नीडम् के साधक सर्वश्री डा० कमलेशकुमार जैन, रामस्वरूप सोनी, गौतमजी, डालमचंद नौलखा व मोहन

लाल भूरा आदि प्रतिनिधियों ने भाग लेकर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन हेतु पुरस्कृत किया। नीडम् द्वारा प्रशिक्षित अध्यापक छात्रों को अपने विद्यालयों में योगासन का नियमित अभ्यास कराते हैं, जिससे छात्रों में अनुशासन व एकाग्रता का विकास होता है।

जयाचार्यके साहित्य प्रकाशन की योजना

जैन विश्व भारती द्वारा आगामी वर्ष में होने वाले "जयाचार्य शताब्दी समारोह" के प्रसंग में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें जयाचार्य के सम्पूर्ण साहित्य के प्रकाशन का निर्णय लिया गया। आचार्य प्रवर के सान्निध्य में आयोजित इस गोष्ठी में सर्वश्री श्रीचंदजी रामपुरिया, न्यायमूर्ति श्री सोहनराज जी कोठारी, प्राध्यापक डा० मूलचंदजी सेठिया, डा० देव कोठारी, डा० किरण नाहटा आदि ने भाग लिया।

जयाचार्य शताब्दी समारोह सबंधी साहित्य-रचना कार्य

श्री जयाचार्य शताब्दी समारोह के लिए साहित्य का कार्य प्रगति की ओर अग्रसर है। निम्नलिखित साधु-साध्वियां साहित्य रचना में सक्रिय हैं—

युवाचार्यश्री महाप्रज्ञजी : (१) श्री जयाचार्य का जीवन चरित्र (२) भगवती पर शोध प्रबंध, (३) चौबीसी और आराधना की भूमिका एवं मूल्यांकन। **मुनिश्री नवरत्नमलजी** : (१) तेरापंथ के तीन आचार्य, (२) अमर गाथा (३) कीर्ति गाथा। **मुनिश्री दिनकरजी** : महीपाल राजा का पाठ निर्धारण कर रहे हैं। **मुनिश्री मधुकरजी** : तेरापंथ संविधान की भूमिका लिख रहे हैं। **मुनिश्री रिद्धकरणजी एवं मुनिश्री हंसराजजी** : प्रश्नोत्तर शतक पर कार्य कर रहे हैं। **मुनिश्री किशनलालजी** : "झीणी चरचा" का पाठ संशोधन कर रहे हैं। **मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी** : (१) आचारांग की जोड़ का मूल्यांकन एवं (२) जैन आगमों में वैज्ञानिक तथ्य। **साध्वीश्री मंजुलाजी** द्वारा श्री जयाचार्य की सचित्र जीवनी लिखी जा चुकी है तथा उनके द्वारा नंदीसूत्र एवं उपासना सूत्र की सामग्री तैयार की जा रही है। **साध्वीश्री चंदनबालाजी** द्वारा तत्त्व चर्चा पिटक के ४५ पाठ संशोधित हो चुके हैं। **साध्वीश्री कनकश्रीजी** ज्ञाता की जोड़ पर कार्य कर रही हैं। उनके द्वारा आगमकोश का कार्य भी किया जा रहा है। **साध्वीश्री कल्पलताजी** "आचारांग रो टब्बो" पर कार्य कर रही हैं।

जयाचार्य का सम्पूर्ण साहित्य तीस ग्रन्थों के ५२ खण्डों में प्रकाशित करने की योजना है। श्री जयाचार्य राजस्थानी भाषा के ऐसे रचनाकार थे, जिन्होंने गद्य और पद्य साहित्य की अनेक विधाओं में विपुल साहित्य का सृजन किया था। उनकी एक कृति "**भगवती सूत्र की जोड़**" राजस्थानी भाषा का विशालतम ग्रन्थ माना जाता है।

तेरापंथ युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन दिनाक १० अक्टूबर ८० से १२ अक्टूबर ८० तक लाडनूं (राज०) स्थित जैन विश्व भारती के प्राङ्गण में सम्पन्न होने जा रहा है, जिसके अन्तर्गत १२ अक्टूबर ८० को बृहत् तेरापंथ युवक

सम्मेलन होगा। अधिवेशन की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही हैं। विस्तृत जानकारी परिषद् की पत्रिका 'पाथेय' के ग्यारहवें अंक में दी गई है।

असम प्रान्त में अणुवाहिनी का संगठन

असम प्रान्त में अणुवाहिनी को संगठित करने का भार श्री सुपारस पगरिया को सौंपा गया है। अणुव्रत समाज संहिता व अणुवाहिनी का संगठन शीघ्र ही असम में तैयार किया जायेगा।

—:o:—

नैतिकता की समस्या समाज की स्थायी समस्या है, क्योंकि मनुष्य के मन में अपने और पराये का भेद बद्धमूल है। नैतिकता की समस्या मनुष्य की अपरिमार्जित आकांक्षा से जीवित है। उसे परिमार्जित करके ही सुलझाया जा सकता है। स्व और पर की दूरी जितनी कम होती है, उतनी ही अनैतिकता कम हो जाती है।

—आचार्य श्री तुलसी

—:o:—

संयम वर्तमान युग की सबसे बड़ी अपेक्षा है। हिंसा, असन्तोष, संग्रह, शोषण, अन्याय - ये सब असंयत मन की निष्पत्तियां हैं। संयम को दमन का रूप न देकर अन्तः प्रेरणा से स्वीकृत करना अधिक लाभप्रद है। समन्वय, स्वतन्त्रता, अहिंसा और अपरिग्रह आत्म-संयम के फलित हैं।

आचार्य श्री तुलसी

—:o:—

जैन विश्व भारती का नवीन प्रकाशन

आगम शब्दकोश

(अंगसुत्ताणि शब्द सूची)

खण्ड १, भाग १, : पृष्ठ संख्या १४+८२४

वाचना-प्रमुख — सम्पादक

आचार्य तुलसी — युवाचार्य महाप्रज्ञ

प्रस्तुत ग्रन्थ आगमकोश के प्रथम खण्ड का प्रथम भाग है। इसमें अंगसूत्रों के शब्द और उनके प्रमाण-स्थल संगृहीत हैं। सन् १९७४ में जैन विश्व भारती द्वारा **'अंगसुत्ताणि'** के तीन भाग प्रकाशित हुये थे। उनमें अंगों का संशोधित पाठ है। उसी को आधार मानकर यह शब्दकोश तैयार किया गया है।

प्रकाशक

जैन विश्व भारती

लाडनूं (राजस्थान) ३४१३०६

जैन विश्व भारती द्वारा संचालित

जैन-विद्या-परीक्षा

अन्य नवीन प्रकाशन

१. जैन परम्परा का इतिहास	—युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ	४.००
२. जैन दर्शन में तत्त्वमीमांसा	,, ,,	५.००
३. जैन विद्या, भाग १	—सम्पा० मुनि सुदर्शन	०.७५
४. जैन विद्या, भाग २	,, ,, ,,	१.२०
५. जैन विद्या, भाग ३	,, ,, ,,	१.८०
६. जैन विद्या, भाग ४	,, ,, ,,	३.००

उपर्युक्त पुस्तकें जैन-विद्या परीक्षा के पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर लिखी गई हैं, अतः जैन-विद्या परीक्षा में बैठने वाले छात्रों को उक्त पुस्तकों से लाभ उठाना चाहिए।

प्रकाशक

जैन विश्व भारती, लाडनूं-३४१३०६

Postal Registration No. RJ 4505
Registered with the Registrar of Newspapers for India;
R. N. 28340/75. TULASI PRAJÑĀ, August-September, 1980

जैन विश्व भारती, लाडनूं

महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

वाचना प्रमुख : **आचार्यश्री तुलसी**, विवेचक तथा सम्पादक : **युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ**

आगम ग्रंथ :

१. अंगसुत्ताणि १ (आयारो, सूयगडो, ठाणं, समवाओ)	८५.००
२. अंगसुत्ताणि २ (भगवई : विआहपण्णत्ती)	९०.००
३. अंगसुत्ताणि ३ (णायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइ, विवागसूयं)	८०.००
[उपर्युक्त तीनों ग्रन्थ संशोधित मूलपाठ, पाठान्तर, पाठान्तर-विमर्श, "जाव" पूर्ति और उसके आधारस्थल, विषयसूची, सम्पादकीय तथा भूमिका से युक्त, प्रत्येक भाग ११००-१२०० पृष्ठ]	
४. दसवेआलियं (द्वितीय संस्करण) पृष्ठ ६१२ साइज डिमाई १/४	८५.००
५. ठाणं पृष्ठ १२०० ,, ,,	१२५.००
६. आयारो—मूलपाठ, हिन्दी अनुवाद तथा टिप्पण	३०.००
७. दशवैकालिक (गुटका) मूलपाठ	१.००
८. उत्तराध्ययन (गुटका) मूलपाठ	३.५०
९. दशवैकालिक तथा उत्तराध्ययन— मात्र हिन्दी अनुवाद	१५.००
१०. दशवैकालिक, उत्तराध्ययन (हिन्दी पद्यानुवाद)	१०.००
आगमेतर ग्रंथ	
११. श्रमण महावीर—युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ	१६.००
१२. भगवान् महावीर—आचार्यश्री तुलसी	५.००
१३. भरतबाहुबलि महाकाव्यं—अनु० मुनिश्री दुलहराज	३०.००
१४. सत्य की खोज : अनेकांत के आलोक में युवाचार्यश्री महाप्रज्ञ	५.००
१५. थ्योरी ऑफ एटम इन जैन फिलोसफी—जे० एस० जवेरी	८.००
१६. श्रेणिक बिम्बिसार एण्ड कूणिक अजातशत्रु	७.००
१७. प्रतिदिन का एक विचार (गुटका)—श्रीचन्द रामपुरिया	४.००
१८. जैन-धर्म के प्रभावक आचार्य—साध्वी संघमित्रा	२५.००
१९. आगम शब्दकोश (अंगसुत्ताणि शब्दसूची) खण्ड १, भाग १	—

:प्राप्ति-स्थान :—

जैन विश्व भारती, लाडनूं (राजस्थान)

Jain Vishva Bharati, Ladnun (Raj.) 341306

प्रकाशक-मुद्रक : रामस्वरूप गर्ग, कार्यालय-सचिव, जैन विश्व भारती, लाडनूं श्याम प्रेस लाडनूं के लिए एस. नारायण एण्ड संस, 7।17/18 पहाड़ी धीरज, दिल्ली में मुद्रित